AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

OCTOBER 2021

St. Therese of the Child Jesus
(1st October)

Holy Guardian Angels
(2nd October)

Pray the Rosary!

माला की रानी, हमारे लिए प्रार्थना कर!

Archdiocese at a glance

Happy Feast
Your Grace Dr. Raphy Manjaly

Pride of St. Mary's Church, Agra

Sim Ajay (Dubai)
Global Teacher Award 2021

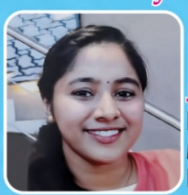

Jibi Lukose
First Rank
M.Sc. (Zoology), DEI, Agra

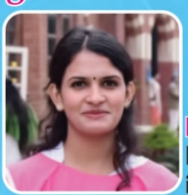

Daisy Mathew
Int. Diploma in YLTT

Priestly Ordination

on Sunday 31st October, 2021 at 4:30 pm at the Cathedral of Immaculate Conception, Agra

Bro. Ajay Franston J.

Bro. S. Babin Ryson

Thanksgiving Eucharist

Wednesday, 10th November 2021 at 10:30 am
at St. James Church, Vaniyakudy

Bro. Justin Augustine

Thanksgiving Eucharist

Sunday, 14th November 2021 at 11am
at St. Mary's Church, Noida

Editorial

प्रिय बन्धुओं, **अग्रेडियन्स** का अक्टूबर महीने का अंक आपके हाथों में है। आशा है कि आपको पसन्द आएगा।

मई महीने की भांति अक्टूबर महीना भी माता मरियम की माला विनती को समर्पित है। सभी विश्वासी और माता रानी के भक्त इस पूरे महीने व्यक्तिगत रूप से या पारिवारिक/सामुदायिक रूप में माला विनती जाप करते हैं। हमने 7 तारीख को माला की महारानी का पर्व मनाया। माला विनती प्रार्थना भक्ति में बहुत शक्ति है। विगत कई सदियों से माला विनती भक्ति पर शैतानी प्रहार होते आए हैं। बहुत से नास्तिक और गैर मसीही राष्ट्रों में जब गिरजाघर नष्ट कर दिए, पुरोहितों को कारागार में डाल दिया गया, और सामूहिक पूजा-भक्ति को बलपूर्वक समाप्त कर दिया गया। तब केवल माता मरियम की माला विनती जाप से ही लोगों में ईश-विश्वास स्थिर रहा। घरों में दादा-दादी और नाना-नानी ने अपनी सन्तानों और उनकी सन्तानों के साथ मिलकर इन विषम परिस्थितियों में भी माला विनती जाप करना नहीं त्यागा। इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी विश्वासी लोग माला विनती जपते रहे और अपने ईमान में मजबूत बने रहे।

माला विनती हम अकेले पढ़ सकते हैं, या अपने परिवार व समुदाय के साथ जप सकते हैं। आप बैठकर, खड़े होकर, घुटने टेककर भी माला विनती कर सकते हैं। आप बोल-बोलकर अथवा गेय (गद्य) में गाकर भी विनती कर सकते हैं। माला विनती आप कभी भी, कहीं भी, किसी भी आसन में बैठकर कर सकते हैं।

इन दिनों संपूर्ण काथलिक कलीसिया 16वीं आम धर्मसभा की सफलता के लिए प्रार्थना कर रही है। हम भी पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें, कि यह धर्मसभा अपने आयोजन के उद्देश्य में पूर्णत: सफल हो। इससे अच्छे नतीजे उभरकर आएं। इसी अंक के पृष्ठ 15 पर धर्मसभा की सफलता के लिए प्रार्थना प्रकाशित की जा रही है। प्रतिदिन इस प्रार्थना को अकेले या परिवार में एक साथ करने का प्रयास करें।

कुछ दिन पहले मैंने एक धर्मबहन से बस यूँ ही जिज्ञासावश प्रश्न किया, कि आप अपने संरक्षक संत (जिनके नाम पर आपका नाम रखा गया है) के विषय में क्या जानती हैं? उनके जीवन, चरित्र और कामों के बारे में आप कह सकती हैं? उन भली बहन ने विनम्रता से स्वीकार किया, कि मुझे उनके बारे में ज्यादा जानकारी रहीं है। मैं शायद उनका उपहास करने ही वाला था, तभी मेरा अन्तरतम चीत्कार उठा कि मैं अपने संरक्षक संत के विषय में कितना जानता हूँ? मुझे अपने आप से ग्लानि होने लगी। बन्धुओं, वही प्रश्न हम अपने आप से कर सकते हैं कि हम अपने संरक्षक संत के विषय में क्या और कितना जानते हैं?

इसी महीने की 17 तारीख को हम विश्व मिशन रविवार के रूप में मनाने वाले हैं। महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी ने अपने संदेश में इस विषय पर विस्तृत चर्चा की है। उन्होंने प्रत्येक ख्रीस्तीय परिवार और इस बदलते युग में उसके मिशन (आध्यात्मिक जिम्मेदारी) को गंभीरतापूर्वक समझाया है। वास्तव में हर परिवार एक घरेलू कलीसिया है। वह प्रारम्भ से ही स्वाभाविक रूप से मिशनरी है। इस प्रकार प्रभु के मिशन को जन-जन तक फैलाने की मिशनरी जिम्मेदारी सिर्फ पुरोहितों, धर्मसंघियों या धर्मशिक्षकों की ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक लोकधर्मी (मसीही) की है। बपतिस्मा संस्कार में हमें यही बुलाहट मिली है।

28 तारीख को हमने एक दिन पूर्व अपने पूजनीय महाधर्माध्यक्ष के संरक्षक महादूत रफाएल का पर्व दिवस मनाया। (सम्बन्धित फोटो, समाचार इस अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं) अग्रेडियन्स टीम आर्चबिशप राफी मंजलि को पर्व दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

गत माह 29 तारीख को हमारे पड़ोसी दिल्ली महाधर्मप्रांत में सहायक धर्माध्यक्ष के रूप में अति श्रद्धेय दीपक वलेरियन ताऊरो का धर्माध्यक्षीय अभिषेक सम्पन्न हुआ। **अग्रेडियन्स** उन्हें बधाई देता है। इतिहास साक्षी है कि एक लम्बे समय तक दिल्ली धर्मप्रांत आगरा महाधर्मप्रांत का ही एक भाग था। आगरा से पुरोहित पवित्र मिस्सा चढ़ाने, संस्कार देने आदि के लिए दिल्ली महाधर्मप्रांत जाया करते थे।

इस महीने रविवार 31 तारीख हमारे तीन उपयाजकों अजय, बबिन और जस्टिन का पुरोहितिक अभिषेक होना तय हुआ है। हम उनके सुखद, स्वस्थ, सफल पुरोहितिक जीवन की कामना करते हैं। आपके पत्रों, सुझावों का हमेशा स्वागत है।

प्रभु में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

SHEPHERD'S VOICE

Every Year in the month of October we celebrate the World Mission Day. It reminds us of our obligation to be missionary disciples of Christ. In this message I would like to share with you some thoughts on the theme,**"The Family and its Mission."**

The Church, born of the evangelizing activity of Jesus and the Twelve, is by her very nature missionary and has but one mission- to evangelize. But before the Church becomes an evangelizer, she needs to be evangelized. This is more so in the family, the Domestic Church that is true to its vocation. Of the many forums and places that are open for evangelization the most basic one is the family. It is in the family that the parents through the grace and gift of the sacrament of matrimony inculcate in their children ethical values to meet the growing demands of living the Gospel in their present time and situation of Life. It is here in the family that the parents as the first educators of children through word and examples impart what it means to be a community of persons, forming a community of persons that is at the service of life, participating in the development of society and sharing in the life and mission of the Church and being Church.

The family as the Domestic Church should and ought to be the place where the Gospel is the rule of life and where the Gospel is lived in its fullness. An excellent example of a family living according to the Word of God and passing on the faith can be found in the Book of Tobit, 'serve God faithfully and do what is right before him, you must tell your children to do what is upright and to give alms, to be mindful of God and at all times to bless his name sincerely and with their strength' (cf.14:8-15). This is a perfect example of parents being the first heralds of the Gospel of their children and true educators of their children by the witness of their lives; praying with them, introducing them to the authentic reading and interpretation of the Word of God, a sacramental life and an active life in the ecclesial community. The extent to which a family is successful in becoming truly the first heralds of the gospel will depend largely on the extent the family accepts and makes the gospel a way of life and to the extent it grows in maturity in the faith so as to evangelize itself and those with whom they as a family come in contact with; and as individuals in the family to all they come in contact with in school, at the place of work, and in the everyday meetings or by chance. Pope Paul VI says, "The family, like the Church, ought to be a place where the Gospel is transmitted and from which the Gospel radiates. In a family

which is conscious of this mission,all the members evangelize and are evangelized. The parents not only communicate the Gospel to their children, but from their children they can themselves receive the same Gospel as deeply lived by them and such a family becomes the evangelizer of many other families, and of the neighborhood of which it forms part." Because the Church by her very nature is missionary, evangelization is the call and duty of every baptized; beginning with Bishops, the ordinate ministers and the laity.

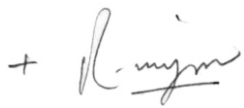

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

प्रतिवर्ष हम अक्टूबर महीने में विश्व मिशन दिवस मनाते हैं। यह दिवस हमें ख्रीस्त के मिशनरी शिष्य बनने की जिम्मेदारी की याद दिलाता है। इस सन्देश के माध्यम से मैं **''परिवार और उसका मिशन''** विषय पर आपके साथ अपने विचार साझा करना चाहता हूँ।

कलीसिया जिसका जन्म और प्रारम्भ ही मसीह और उनके शिष्यों के प्रेरितिक प्रयासों और गतिविधियों से हुआ है, स्वाभाविक रूप से मिशनरी है, और उसका सिर्फ एक ही लक्ष्य है – दूसरों को प्रभु की शिक्षा से प्रेरित करना। किन्तु इससे पहले कि कलीसिया दूसरों को प्रेरित करे, उसे स्वयं प्रेरित होना है। प्रभु की शिक्षा से पारंगत होना है। यह परिवार में ही सरलतापूर्वक हो सकता है, क्योंकि परिवार एक घरेलू कलीसिया है और अपनी बुलाहट के प्रति हमेशा ईमानदार है। प्रेरितिक कार्यों के लिए वैसे तो कई माध्यम हैं, किन्तु उन सबमें परिवार ही मौलिक (प्रथम) है। परिवार में माता पिता अपने वैवाहिक संस्कार की कृपा और वरदान के द्वारा अपने बच्चों में नैतिक मूल्य स्थापित करते हैं और उन्हें बढ़ाते हैं, ताकि वे जीवन की हर स्थिति में सुसमाचारी मूल्यों व आदर्शों के अनुसार जीवन जीने की चुनौतियों का सामना कर सकें। परिवार में ही माता–पिता अपनी संतान के प्रथम शिक्षक होते हैं, जो अपने जीवन, आचरण, वचन और अच्छे उदाहरणों से यह समझाते हैं, कि व्यक्तियों के समुदाय का क्या मतलब होता है? किस प्रकार से एक समुदाय बनता है, जहाँ लोग अपना जीवन दूसरों की सेवा में बिताना सीखते हैं, इसके साथ ही समाज के विकास में एवं कलीसिया के जीवन और मिशन में अपना सहयोग देकर स्वयं कलीसिया बन जाते हैं।

घरेलू कलीसिया के रूप में परिवार ऐसा होना चाहिए, जहाँ सुसमाचारी मूल्यों पर हमारा जीवन आधारित हो और जहाँ सुसमाचार अपनी पूर्णता के साथ जीया जाए। ईश वचन के अनुसार जीवन जीने और अपने विश्वास को दूसरों तक पहुँचाने (बाँटने) का एक उत्तम उदाहरण हमें टोबीत की पुस्तक में देखने को मिलता है; ''सच्चाई से ईश्वर की सेवा करो और उसके सामने वह करो, जो उसे प्रिय है। अपने पुत्रों को यह आदेश दो कि वे धर्माचरण और भिक्षादान करें, ईश्वर का स्मरण करें और सच्चाई और सारी शक्ति से हर समय उसका नाम धन्य कहें' (टोबीत का ग्रन्थ 14:8–51)। यह माता पिता होने का सर्वोत्तम उदाहरण है, जहाँ माता पिता अपने बच्चों

के लिए सुसमाचार के प्रथम अग्रदूत हैं। ये माता पिता जो अपने जीवन द्वारा बच्चों के सामने साक्षी देते हैं, उनके सच्चे शिक्षक हैं, उनके साथ प्रार्थना करते हैं, उन्हें ईश वचन का सच्चा पाठ पढ़ाते और उसकी व्याख्या करते हैं, सांस्कारिक जीने के साथ-साथ कलीसियाई समुदाय में एक सक्रिय जीवन जीते हैं। परिवार किस हद तक सुसमाचार का प्रथम अग्रदूत बनता है यह इस बात पर निर्भर करता है, कि वह (परिवार) सुसमाचार को किस सीमा तक अपने जीवन में स्वीकार करता और उसके अनुरूप अपना जीवन जीता और विश्वास की परिपक्वता में उन्नति करता है, तभी वह प्रेरित होकर उन सबको व्यक्तिगत रूप से प्रेरिता करता है, जो उसके साथ विद्यालय में, कार्यस्थल में लोगों से प्रतिदिन अथवा अनायास ही मिलता है। संत पिता पॉल षष्ठम कहते हैं, ''कलीसिया की भांति परिवार वह स्थान है, जहाँ से सुसमाचार प्रसारित होता (फैलता) है। ऐसे परिवार में, जो अपने इस मिशन के प्रति सचेत है, सभी सदस्य स्वयं प्रेरित (प्रभु के इस मिशन के प्रति अभिषिक्त) हैं, दूसरों को प्रेरित करते हैं। उस परिवार में माता-पिता अपने बच्चों को मात्र सुसमाचारी सुनाते (पहुँचाते) ही नहीं हैं, किन्ते वे स्वयं भी अपने बच्चों से उसी सुसमाचार को सुनते (ग्रहण) करते हैं। ऐसा परिवार अन्य बहुत से परिवारों को तथा अपने पास पड़ोस को प्रेरित कर उसी का एक भाग बन जाता है। चूँकि कलीसिया अपने स्वभाव से ही मिशनरी है, दूसरों को सुसमाचार सुनाकर प्रेरित करना प्रत्येक बपतिस्मा प्राप्त मसीही की बुलाहट और कर्तव्य है, चाहे वह धर्माध्यक्ष हो, अभिषिक्त सेवक अथवा लोकधर्मी हो।

विश्व मिशन रविवार की शुभकामनाओं सहित,
प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**
(आगरा के महाधर्माध्यक्ष)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (OCTOBER, 2021)

1	Holy Mass: MSST Convent, Greater Noida
2	Holy Mass: Holy Communion and Confirmation, St. Theresa's Church, Kosi Kalan
3	Holy Mass: Holy Communion and Confirmation, St. Patrick's Church, Agra Cantt
3	Holy Mass: St. Francis Church, Hathras
6	Agra Joint Cemetery Committee Meeting
9	Holy Mass: Bal Bhawan, Greater Noida
10	Traveling to Jaipur
11	Return & Retreat
12	Retreat
13	Holy Mass: at 6:30 a.m, Fatima Convent, Agra & Retreat
14	Retreat
15	Retreat
17	Festal Mass: Holy Communion and Confirmation, Rosary Mission, Bastar
18	Caritas Regional Meeting
19	ARCC Metting
21	CCBI Meeting
24	Pastoral Visit, Mathura
30	Holy Mass: Holy Communion and Confirmation, St. Fidelis Church, Aligarh
31	Priestly Ordination of Deacon Ajay Franston, Deacon Babin Ryson and Deacon Justin Augustin, Cathedral of the Immaculate Conception, Wazirpura Road, Agra at 4:30 p.m.

Leadership with Love and Humility

"If your actions inspire others to dream more, learn more, do more, and become more, you are a leader." ***(John Quincy Adams)***

I often have heard from my elders that you don't need a title to be a leader.Look around, pay attention and get involved. Look for opportunities to lead and don't wait for someone to bring them to you. Leadership should be borne out of a desire to contribute rather than simply achieve. Initiative is a pre-requisite to effective influence. Leadership means different things to different people around the world and different things in different situations.

For us Christians, Jesus is the highest role model of leadership, and, according to Him, there is only one way to lead - serve with love and humility. We know that everything Jesus did, He did out of love. Jesus is the perfect example of how such a love can be demonstrated. Though He was God, Jesus emptied himself being born in the humble environment of a stable. Even though he was a king, he owned nothing and did not have a home to live in. Though He was the greatest leader His act of washing the feet of His disciples out show His humility and servant leadership. Yes, His love extended even to the Cross. In John 21:15-17, Jesus asks Peter thrice, "Do you love me?". All three times Peter answers, Yes Lord, you know that I love you. But each time Peter affirms his love for Jesus, and then Jesus directs him to take care of His sheep. We know that Jesus used the term sheep for His followers. His command to Peter applies to us too today. We are called to lead His sheep by loving them and caring for them.

We Indians on 2nd October marked our homage to Mahatma Gandhi on the 152nd birth anniversary of the "Father of the Nation" who taught Indians the values of truth and non-violence during the freedom movement. Every Gandhi Jayanti, is another occasion to remember the Mahatma, who is also fondly referred to as "Bapu" who gave his life for the nation. Truth and Non-Violence were the two key components of his creed. Today, Gandhi is the most frequently invoked Indian personality by world leaders.

Gandhi's leadership role was extremely complex. Knowing that violence only begets violence, he began practicing passive resistance, Satyagraha. Mahatma Gandhi was a leader who brought one of the world's most powerful nations to its knees by using peace, love, humility and integrity as his method for change. Gandhi's entire life story is about action, to bring about positive change. He both succeeded and failed in what he sought to do, but he always moved forward and he never gave up the quest for improvement, both social and spiritual, and both for individuals and for the nation as a whole. Today, Gandhi is remembered not only as a political leader, but as a moralist as his effect on the world was and still is immense. His life was a message - a message of peace over power, of finding ways to reconcile our differences, of thinking about and acting upon value systems and of living in harmony with respect and love even for enemies. Gandhi can be considered

the most modern political thinker India has ever had. One of his most admirable qualities was that he led by example and never preached what he himself was not willing to do. He was charismatic, but he was also deliberate and analytical. He was a transformational and transactional leader too. Mahatma Gandhi taught us that we can bring harmony to our world by becoming champions of love and peace for all. Today, in a society steeped in corruption, perhaps there is a need to rediscover Gandhi.

Today we are called for a paradigm shift in leadership. The time of the command-and control leadership is never appreciated in the present society. No one is going to tolerate the traditional Power and Authority model of leadership anymore. Many secular organisations are turning to servant leadership as their overarching leadership philosophy. In the corporate world, a servant leader is as "someone who invests in the life of another person to the extent that the other person becomes better, bigger, wiser, richer, healthier, wealthier, happier and more famous than the leader himself". This type of investing in others is not possible without love. We should not limit this to formal leaders. This can apply to everyone of us, immaterial of whether or not we hold a formal leadership position.

Significance is when we use our success and leadership to add value to others, our wisdom to lift up the foolish, our knowledge to educate the unlearned, our wealth to help the poor, our health to care for the sick, and our network to help someone in need. If all of us do our bit, like Fr. Stan Swamy, who worked for the upliftment of Adivasis and marginalised in eastern tribal states and was jailed and sacrificed his life for a greater cause. Like Mother Teresa who dedicated her life to caring for the destitute and dying in the slums of Kolkata. Like Priyanka Gandhi who raised her voice for justice for the brutally killed farmers in LakhimpurKheri. Like considerable influence of Didi-Mamata Banerjee, the iron lady of our time who conquered West Bengal election. We have no doubt that our leaders and followers will inherit a better world. Let us add love and humility in all our future endeavors and do make the commitment "My duty is to take care of the people I am entrusted with, to care for their well being, to motivate them, to develop them, to help them grow and succeed, be it be in family, community or society".

Sr. Anjali Jacob, UMI
Nirmala Provincialate, G. Noida

Hymn to St. Joseph

(Dedicated to him in his year)

St. Joseph you are our patron
St. Joseph you are our model
St. Joseph you are our father true
Long live! Long live! St. Joseph.

God the Father picked up Joseph
from the whole human race
to be the man to raise up
Jesus Christ His only Son.

He was a just and rightous man
The greatest and holiest saint
That's why God chose the very best
To raise His only Son.

He was a great example to Jesus,
in words and deeds
The world's greatest father
educator of Jesus Christ.

He home-schooled Jesus lovingly
To lead a virtuous life
he was the perfect father
educator of Jesus Christ.

Sr. Marina Soares (SHM)
St. Jude's Church, Kaulakha, Agra

Sabbath Rest: An Obligatory or A Supplementary!

Theology of rest is an essential component. The practice of Sabbath rest is a balm for the contemporary issues of emotional, prolonged stress and burnout that many full-time ministers experience during their ministry. As King Solomon accords, "Working without rest is like chasing after the wind," (cf. Eccl 4:6).

God's rest is a common theme in O.T. The Lord warned Israel, "Do not harden your hearts, as at Meribah, as on the day at Massah in the wilderness; when your ancestors tested me…" (Ps 95: 7-9, 11). After having quoted this passage, the writer of Hebrews warns those who made a pretence of faith in Christ but not really trusted him: "Take care, brothers…" (Heb 3:12). The concept of Sabbath rest is a motif that is woven throughout Hebrew Scriptures and N.T. There are numerous passages exemplifying the rest motif (cf. 1 Chron 22:9, 1 Kings 8:56, 2 Chron 20:30, 2 Sam 7:1, Is 14:3, 66:1, 28:12, Josh 21: 44-45, Mic 2:10).In Hebrew Scriptures, the observance of the Sabbath was a reminder for Israel to be in right accord with God, people and God's creation. In the covenant treaty, Yahweh chose to align Himself to the people of Israel in loving, kindness, grace and mercy, described in the Hebrew term chesed(cf. Ex 34:6, Dan 9:7, Jon 4:2, Neh 9:17, Ps 103:8).

In the early Church many Jews were attracted to the gospel and outwardly identified themselves with the Church. But for fear of being unsynagogued, ostracized from the worship and ceremonies of Judaism, some of them did not truly receive Christ as saving Lord. As a result of such superficial allegiance, John says, "Many of his disciples…" (Jn 6:66).

Samuel Miller (Theologian) notes, it is "Pharaoh's exploitation of human life and human work that triggers God's gift of the Sabbath". In addition, he suggests that the fourth commandment stands as a bridge between the Ten Commandment established by God through Moses (cf. Deut 5: 12 -14), the first to third commands centering on right relationship with God and the fifth to tenth commands highlight right relationship with humankind.

Walter Brueggemann (Theologian) expands upon Miller's insight, noting that within the first three commands God is at rest and in the following commands neighbour is at rest. He suggests: in our own contemporary context of the rat race of anxiety, the celebration of the Sabbath is an act of both resistance and alternative. It is resistance because it is a visible insistence that our lives are not defined by the production and consumption of commodity goods. And then alternative on offer is the awareness and practice of the claim we are situated on the receiving end of the gifts of God's.

The Sabbath is considered a blessed rest from toil and troubles. It is an engagement in the work of God and a matter of obedience. The Sabbath rest commanded by God (Exod 20:8 - 11) also has humanitarian and moral implications. The dictionary gives several definitions of rest that remarkably parallel the spiritual rest God offers those who have trusted His Son.

First, the dictionary describes rest as cessation from action, motion, labour, or exertion. In a similar way, to enter God's rest is to cease from all efforts at self-help in trying to earn salvation.

Second, rest is described as freedom from that which wearies or disturbs. Again we see spiritual parallel of God's giving His children freedom from the cares and burdens that rob them of peace and joy.

Third, the dictionary defines rest as something that is fixed and settled. Similarly, to be in God's rest is to have the wonderful assurance that our eternal destiny is secure in Christ, our Lord and Saviour. It is to be freed from the uncertainties of running from philosophy to philosophy, from religion to religion, from guru to guru, hoping somehow and somewhere to discover truth, peace, happiness and eternal life.

Fourth, rest is defined as being confident and trustful. When we enter God's rest we are given the assurance that, "The one who began a good work among you will bring it to completion by the day of Christ Jesus (Phil 1:6)".

Finally, rest is leaning, reposing or depending on. As children of God, we can depend with utter certainty that our heavenly Father will, "Satisfy every needs of yours according to his riches in glory in Christ Jesus" (Phil 4:19).Sabbath rest rhythm is rooted in God's time (cf. 2 Pet 3:8, Ps 90:4). Sabbath, therefore, requires a spiritual perspective, recognizing that it is more than a day or a year. So, to be observed as a spiritual discipline, along with prayer and solitude and to be practiced as a rhythm in each day to create space for God.

Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru

ज़करियस और मरियमः एक तुलनात्मक अध्ययन

संत लूकस के सुसमाचार के प्रारम्भिक अध्यायों में हम दो धार्मिक और समझदार चरित्रों से भेंट करते हैं। ये दोनों हैं– ज़करियस और धन्य कुँवारी मरियम।

इन दोनों को ईश्वर ने अपनी योजना को पूरा करने के लिए चुना। दोनों के सम्मुख स्वर्गदूत गाब्रिएल प्रकट होता है और दोनों को ईश्वर का संदेश देता है। किन्तु फिर भी दोनों की प्रतिक्रियाएं भिन्न हैं।

ज़करियस को गाब्रिएल स्वर्गदूत ने संदेश दिया, कि उसकी बाँझ और बूढ़ी पत्नी एक पुत्र को जन्म देगी। वह पुत्र बड़ा होकर लोगों को मसीह के आगमन के लिए तैयार करेगा।

वही स्वर्गदूत गाब्रिएल मरियम को संदेश देकर कहता है, कि कुँवारी होने पर भी पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी। वह पुत्र ही मसीह कहलाएगा।

ज़करियस स्वर्गदूत के संदेश पर संदेह करता है और उससे इस सम्बन्ध में प्रश्न करता है, जबकि दूसरी ओर कुँवारी मरियम दूत से कहती हैं कि वह ईश्वर की दासी है और ईश्वर का वचन उसमें पूरा हो जाए।

मरियम यह भी नहीं सोचती, कि उसके इस प्रकार से 'हाँ' कहने से उसके परिवार पर क्या बीतेगी। ईश्वर की इच्छा पर उसे दृढ़ विश्वास था।

मित्रों, हमें धन्य कुँवारी मरियम के समान ईश्वर पर, उसकी प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ विश्वास करना चाहिए। उसकी योजना को अपने जीवन में स्वीकार करना चाहिए।

— पॉलिन फ्रांसिस, गोरखपुर (उ. प्र.)

The Holy Father's Prayer Intention

OCTOBER - 2021

Intention for Evangelization - Missionary Disciples: We pray that every baptized person may be engaged in evangelization, available to the mission, by being witnesses of a life that has the flavour of the Gospel.

It always feels COOL here!

The many preoccupations, abruptly appearing challenges on a daily basis, too many demands and too little resources within, all seemed to push me to the edge and take a toll over my mental as well as physical well-being. I wondered, where lay the refuge I could hide myself in! In desperation, the mind constantly whispered, *"Escape from here…to some oasis of peace!"*

And then accidentally, I read about one Zen nun. She died, but before she died she asked her disciples, *"What do you suggest? How should I die?"* It is an old tradition in Zen that Masters are so playful even about death, so humorous about it, joking, laughing, they enjoy devising methods how to die. So disciples may suggest, *"Master, this will be good, if you die standing on your head." Or someone suggests, "Walking, because we have never seen anyone die walking." So this Zen nun asked, "What do you suggest?"*

They said, *"It will be good if we prepare a fire, and you sit in it and die meditating."*

She said, *"This is beautiful, and never heard of before."* So they prepared a funeral pyre, the nun made herself comfortable in it, sat in a Buddha posture, and then they lit the fire.

One man from the crowd asked, *"How does it feel there? It is so hot that I cannot even come nearer to ask you- that's why I am shouting. How does it feel there?"*

The nun laughed and said, *"Only a fool can ask such a question - How does it feel there? **There it always feels cool, perfectly cool."*** She was talking of her inner being, her centre. There it is always cool and only a foolish person can ask. When a person is ready to sit in a pyre meditating, and then the pyre is burnt and she is sitting silently, obviously it shows that **this person must have achieved the innermost cool point which cannot be disturbed by any fire.**

Yes friends, indeed the times are stressful and tougher times are still ahead! **But, the GOOD NEWS for us is that there is this innermost COOL POINT within us where lies our OASIS…** no tensions or turmoil can ever touch it, or influence it…and to it we can have recourse and find peace even in the worst of our life situations.

Infinite space, an unbridgeable gap exists between us and our body, mind or emotions - infinite space, I say. And all suffering exists only on the periphery. Once we learn to dive deep into this innermost point, the original source, we become aware of the blissful inner being and are no more the sufferers.

Those who are on the periphery exist in agony. For them, no ecstasy. For those who have come to their centre, no agony exists. For them, only ecstasy. They reach a peak, such a cool peak, even the Himalayas will feel jealous; even their peaks are not so cool. **This is the Everest within…** that is none other than **the Emmanuel God within you and me!**

May we all be blessed with the grace and anointing to reach this cool peak, this innermost source and discover true bliss! Amen!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

To be an Extraordinary

(A talk given by Rev. Fr. Saroj Nayak on the occasion of Clergy Monthly Recollection, on 28th September, 2021)

We are all ordinary human beings so there is always a tendency to react with our emotions, attitudes, behaviors and feelings.

For ex:-

- If someone gets angry with us, we also get angry
- If someone fights with us, we also fight
- If someone gives scoldings, we also scold
- If someone treats us badly, we also treat them badly
- If someone doesn't give respect, we also don't give respect

So this is a kind of Tit for Tat attitude seen in ordinary human beings. In today's passage also Jesus mentions, if you love those who love you, what credit is that to you? For even sinners love those who love them. If you do good to those who do good to you, what credit is that to you? For even sinners do the same. If you lend to those from whom you hope to receive, what credit is that to you? Even sinners lend to sinners, expecting to be repaid in full.

So today Jesus is teaching as challenging us to be different from these ordinary qualities. To be different from these ordinary qualities, Jesus is giving us the extra ordinary qualities to be practiced. The extra ordinary qualities according to him are: -

- Love- your enemies
- Do Good- to those who hate you
- Bless- those who curse you
- Pray- for those who abuse you

To practice all these qualities are difficult but Jesus is challenging us:-

- To love not only to those who love us but also to love our enemies.
- Do good not only to those who do good to us but also to those who hate us.
- Bless not only those who bless us but also those who curse us.
- Pray not only for those who pray for us but also those who abuse us.

When Jesus came in this world, came as an ordinary human being but he showed the extraordinary qualities. We, as priests are the representatives of Jesus Christ, so need to practice the extra ordinary qualities that we receive from the Lord. If we don't practice the extra ordinary qualities then we become ordinary. If we remain as ordinary then there is no difference between the ordinary lay people and us as priests.

God wants to make difference in our life, so that we can make a difference in the lives of others. God wants to work in us and with us and through us for his people. So we as priests are called to do extraordinarily.

Let us take some of the examples; How Jesus showed the extraordinary qualities in his life. We read in the Gospel of St. John Ch. 8, the woman caught in adultery. The Scribes and the Pharisees brought a woman who had been caught in adultery and made her stand before all of them. They said to him, "teacher, this woman was caught in the very act of committing adultery. Now in the Law, Moses commanded us to stone such women. Now what do you say?

From the ordinary perspective if we look at

the passage we try to go according to the rules and also try to stone at her. But here Jesus brings the extraordinary qualities that instead of condemning her, he forgives her sins. Jesus says, "neither do I condemn you, go your way and from now on do not sin again".

In the Gospel of St. Lk: 23:34 at the time of Crucifixion, Jesus brings extraordinary qualities. He says Father; "forgive them for they do not know what they are doing". From the ordinary perspective when we look at this incident, we may not able to forgive when someone killing us rather we take revenge and it is not possible to forgive that person. So Jesus is showing us that how we can be different from the ordinary. Same example also we can see in the life of St. Stephen at the time of persecution, he knelt down and cried out in a loud voice, "Lord do not hold this sin against them".

Another example is Maria Goretti , when she was only eleven years old, she suffered a brutal assault. After she refused the advances of an old farmhand named Alessandro Serenelli, he stabbed her multiple times. She was taken to the hospital and in the last hours of her life, Maria forgave her attacker, expressing her wish that he would repent and turn to Christ.

Let us take the example of Mother Teresa of Calcutta. One day it so happened that there was nothing for the children to eat. Mother Teresa did not know what to do. She called all the children and said, "come children today we have nothing to eat in the house. But if we pray to God he will surely give." After ten minutes of prayers, Mother Teresa said to the children "come now let us go and beg." So they all went to beg. In the neighbourhood of Mother Teresa's home, there was one shopkeeper who hated Mother Teresa. Mother went to him and said, " please give something to eat". The person looked at Mother Teresa with anger and spit saliva on Mother Teresa's hand. Mother gently wiped the saliva with her sari and said, "Thank you for what you have given to me. Now, will you give something for my children?" The shopkeeper was shocked at the humility of Mother Teresa asked pardon from Mother Teresa. Then on he began to help regularly to the orphan children.

So my dear brother priests let us reflect how we respond when someone is against us, criticizes us, hates us and rejects us?. Do we have extraordinary qualities to face all these problems when it comes into our life? and are we ready to face all challenges as a priest? To practice extraordinary qualities we need to have pure mind and pure heart.

TRANSFORMATION OF MIND AND HEART:

In Roman 8:5-6 St. Paul says for those who live according to the flesh, set their minds on the things of flesh, but those who live according to the Spirit set their minds on the things of the Spirit. To set the mind on the flesh is death, but to set the mind on the Spirit is life and peace.

As an ordinary human being to set the mind on the Spirit rather than setting on flesh is a transformation of our mind. When our mind is set on Spirit then we are able to think and judge extraordinarily.

Heart-(Mt 15:18-19) But what comes out of the mouth proceeds from the heart defiles a person. For out of heart come evil thoughts murder, adultery, sexual immorality, theft, false witness, slander.

Lk: 6:45- The good person out of the good treasures of his heart produces good, and the evil person out of his evil treasure produces evil,

for out of the abundance of the heart his month speaks.

GOOD TREASURE:

Thus the heart has the desire of peace, life, kindness, self -control, obedience, righteousness and ability to surrender and submit to God's holy will and purpose.

EVIL TREASURE:

Unbelief, unable to forgive, selfishness, pride, ambition, competition, unable to surrender and submit to God's holy will and purpose. Remember our heart is the content of all actions and true motives. True Godliness and heart transformation is obtained by the supernatural grace of God causing to be transformed more into His heart which has no selfishness pride and disobedience. Let us surrender our mind and heart in front of the Lord so that our mind and heart may be purified by the Grace of God.

As Jesus says, "do not judge and you will not be judged, do not condemn and you will not be condemned, forgive and you will be forgiven". So when our mind and heart is purified, then we look at things differently. So let us think differently, act differently and to be extraordinary in all fields.

The Ant and the Contact Lens : A True Story

Brenda was almost halfway to the top of the tremendous granite cliff. She was standing on a ledge where she was taking a breath during this, her first rock climb. As she rested there, the safety rope snapped against her eye and knocked out her contact lens. 'Great', she thought. 'Here I am on a rock ledge, hundreds of feet from the bottom and hundreds of feet to the top of this cliff, and now my sight is blurry.'

She looked and looked, hoping that somehow it had landed on the ledge. But it just wasn't there.

She felt the panic rising in her, so she began praying. She prayed for calm, and she prayed that she may find her contact lens.

When she got to the top, a friend examined her eye and her clothing for the lens, but it was not to be found. Although she was calm now that she was at the top, she was saddened because she could not clearly see across the range of mountains.

She prayed to God .....Oh God! You can see all these mountains. You know every stone and leaf, and You know exactly where my contact lens is. Please help me.'

A little later, another set of hikers reached the top. One of them shouted out, 'Hey, you guys! Anybody lost a contact lens?'

Well, that would be startling enough, but you know why the climber saw it? An ant was moving slowly across a twig on the face of the rock, carrying it!

The story doesn't end there. Brenda's father is a cartoonist. When she told him the incredible story of the ant, the prayer, and the contact lens, he drew a cartoon of an ant lugging that contact lens with the caption, 'God I don't know why You want me to carry this thing. I can't eat it, and it's awfully heavy. But if this is what You want me to do, I'll carry it for You.'

I think it would do all of us some good to say, " *God , I don't know why You want me to carry this load. I can see no good in it and it's awfully heavy. But, if You want me to carry it, I will* ".

God doesn't call the qualified, He QUALIFIES those He calls.

Source: Unknown

हम सब पर परमेश्वर का अनुग्रह !

प्रभु यीशु मसीह में मेरे प्यारे भाइयों-बहनों, आज हम जीवित परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह देखने जा रहे हैं। आज हम मसीही भाई-बहनों के लिये सबसे बड़ा अनुग्रह यही है कि हमारे परम पिता परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए सूली पर दे दिया कि उसके बलिदान के द्वारा हम अनंत जीवन के सहभागी बन जायें। आज हम जीवित परमेश्वर का आशीर्वाद व अनुग्रह देखने जा रहे हैं।

प्रिय भाईयो-बहनों, आज हमें अपने आसपास एक नयी बात देखने को मिलती है। वह क्या है? (बहस) एक दूसरे को पीछे छोड़ देने की तैयारी। मैं किसी अच्छे स्कूल में पढ़ूँगा तो उसको पीछे छोड़ दूँगा। मैं अगर विदेश में नौकरी करूँगा तो अधिक धन कमा सकूँगा। तब कुछ और व्यक्ति व युवा भी यही सोचते हैं कि हम विदेश चलते हैं। या कैसे जाएं, नहीं तो वह हमसे या मुझसे आगे निकल जायेगा। प्रभु में प्यारे भाइयो-बहनों मैं यह नहीं कहता कि धन मत कमाओ या अच्छे स्कूल में मत पढ़ो। लेकिन किसी को पीछे छोड़ देने या किसी से आगे निकल जाने के लिए नहीं, बल्कि प्रभु की महिमा के लिए।

यशायाह 43:7 उन सबको जो मेरे कहलाते हैं जिनकी सृष्टि मैंने अपनी महिमा के लिए की है। जिन्हें मैंने गढ़ा और बनाया है। हम स्वयं देख सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें अपनी महिमा के लिए सृजा है।

आज अनेक लोग एक-दूसरे से यह कहते हैं कि हमारे पास जीवन की सारी मूलभूत सुविधाएं थीं। इसलिए आज हम इस (पद) पर हैं या फिर हम अच्छे परिवार से आते हैं। इसलिए हम एक अच्छे स्थान को ग्रहण कर सके। यह जो अभी हमने पढ़ा, यह मनुष्यों की सोच थी। लेकिन अब हम परमेश्वर का अनुग्रह देखेंगे।

आमोस 7:14 ''आमोस की अमस्या को यह उत्तर दिया, मैं न तो नबी था और न नबी की संतान। मैं चरवाहा था और गूलर के पेड़ छांटने वाला। 7:15 मैं झुण्ड चरा ही रहा था कि प्रभु ने मुझे बुलाया और मुझसे यह कहा, 'जाओ मेरी प्रजा इस्राएल के लिए भविष्यवाणी करो।'

प्रिय भाईयो-बहनों आप स्वयं देख व समझ सकते हैं कि (आमोस) क्या कहता है। न तो वह नबी था और न ही नबी की सन्तान। फिर भी परमेश्वर ने अनुग्रह किया, क्योंकि परमेश्वर दयालु है। जैसे आज समाज में मनुष्य तर्क वितर्क करते हैं कि तुमको यह नहीं आता तुमको वो नहीं आता तुम अच्छे पढ़े-लिखे नहीं हो तुम तो जरूर कोई छोटा काम करोगे।

लेकिन हमारा अनुग्रहकारी परमेश्वर यह नहीं पूछता कि आपकी (शिक्षा) क्या है। आप अंग्रेजी बोलना जानते हो कि नहीं या आप किसी नामचीन व्यक्ति की संतान हो तब ही मैं तुम पर अनुग्रह करूँगा। आइये हम रोमियों की पुस्तक में देखते हैं।

रोमियो 9:14 इस सम्बन्ध में हम क्या कहें? क्या ईश्वर अन्याय करता है। कदापि नहीं। रोमियो 9:15 उसने मूसा से कहा, ''मैं जिस पर दया करना चाहूँगा, उसी पर दया करूँगा और जिस पर तरस खाना चाहूँगा उसी पर तरस खाऊँगा। रोमियो 9:16 इसलिए यह मनुष्य की इच्छा या उसके परिश्रम पर नहीं बल्कि दया करने वाले ईश्वर पर निर्भर रहता है।

हम इन वचनों के माध्यम से भलीभांति समझ सकते हैं कि हमारे कर्म, हमारी बुद्धि, हमारा परिश्रम यह मायने नहीं रखता है। यह जो सब कुछ हमारे पास है, यह सब परमेश्वर का अनुग्रह और उसके द्वारा दिये हुये दान हैं।

प्रिय भाइयों परमेश्वर को इन बातों से कोई लेना-देना नहीं है कि आप कहाँ पैदा हुये हैं या आप कितने पढ़े-लिखे हो या आप किस स्थिति में हो। वह अनुग्रहकारी परमेश्वर है।

—नरेन्द्र मैसी, सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा

A Journey through Pain & Suffering

During the past few days, I've been able to hear the stories of various women who suffered during Pandemic. I always listened to many and then often ignore about it, but this time listening just seemed different to me. And today I realized that I've been impacted by how powerful it is for people to have the opportunity to tell their stories.

I think we all appreciate when others take an interest in our lives and take the time to listen to our hearts. But for those who usually don't have a voice….who are constantly rejected by the society around them… there is something incredibly beautiful, powerful, and healing that occurs as they share their stories. This opened my eyes to many inspiring thoughts of suffering

Suffering is an immense and an intense reality of our lives. Many times, sufferings hit our lives when…… we least expect it … we are least prepared for it.

Such moments of pain and agony…when encountered without any faith……. can cause us to lose any meaning in life and render our life to be shorn of hope… can cause us to question God and His goodness and strip our faith of its strength… can cause us to have recourse to "unbecoming" means to relieve ourselves from pain.

However, such moments of suffering and difficulties…. when faced with deep faith and trust…… will become occasions of God's overflowing grace filling our lives and making us stronger … will become occasions for us to depend deeper on our Creator and to feel His power more strongly… will become occasions for us to realise the value of life and become more compassionate towards others

This is what we learn from the life of our Blessed Mother Mary - the Mother of Sorrows and the Mother of Compassion.

She had every reason to complain and fight against God…

She had every reason to protest and abandon God and His Will…

She had every reason to murmur and let go of the plan of God for Her…

But, the "Yes" that she pronounced at the Annunciation was echoed all through her life... At every step... Be it in times of joy and calmness... Be it in times of sadness and calamity

The "Yes" she said was the Final Profession she made…… just as the Religious make on the Day of their Profession … just as the Priests make on the Day of their Ordination… just as the Married make to each other, on their Day of Wedding. It was binding for life.. It was committed to, with conviction… It was lived in sincerity, with dedication.

The picture of the Mother of Sorrows is a beautiful reminder and reflection on "Two Hearts that were united to each other, burning with love" - the Sacred Heart of Jesus and the Immaculate Heart of Blessed Mother Mary! All the while, Mary accompanies us and encourages us in picking up our daily cross, allowing us to find in her and in her sorrows the hope of our faith.

Let us draw strength and courage from our Blessed Lady of Sorrows, to embrace our daily crosses with hope and to witness our true love of God and our neighbours in bringing God's kingdom.

- Sr. Juliet, PSOL

हमारा सच्चा सुख?

सृष्टि का प्रत्येक प्राणी यह जानता है कि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है, जगत और उसमें निवास करने वाले भी, क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी है। फिर हमारा मन भटक क्यों जाता है, आशा तो दीपक है, शिक्षा ज्योति और सिखाने वाले की डांट जीवन का मार्ग है, क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम रखता है, उसको डांटता है जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है। संसार की चकाचौंध में हम परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए भी अविश्वासी हो जाते हैं। पिता ने हमें कितना प्यार किया है कि हम ईश्वर की सन्तान कहलाते हैं और हम वास्तव में वही हैं। हमारा विश्वास ही जवीन को पवित्र और मजबूत बनाता है, जैसे प्रभु यीशु ने कहा है, कि ''जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा।'' (मत्ती 21:22)

परमेश्वर ने कहा है कि ''न्याय प्रकाश के समान चमकता है क्योंकि मैं बलिदान से नहीं स्थिर प्रेम से ही प्रसन्न होता हूँ। और होम बलियों से अधिक यह चाहता हूँ कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें'' (होशे 6:6) इन सब बातों के रहते हुए भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं फिरे और न उसको ढूँढा। (होशे 10:10)

दाऊद ने कहा, ''यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी न होगी'' प्रभु कहते हैं ''माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल सकती है पर मैं तुम्हें नहीं भूल सकता।'' हम पढ़ते हैं कि जहाँ दो या अधिक व्यक्ति एकत्र होकर मेरे नाम की प्रार्थना करते हैं मैं वहाँ मौजूद रहता हूँ।'' हमें यह भी पता है कि परमेश्वर हमारे साथ-साथ रहता है। वह हमारा पिता है और सारे संकटों से छुड़ाने वाला है। ज्ञान मनुष्य को पूर्ण बनाता है साथ ही समाज में सिर उठाने की शक्ति भी प्रदान करता है। वचन कहता है- ''यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो और तुम इस पहाड़ से यह कहो यहाँ से हट जा, तो वह हट जाएगा।'' (मत्ती 17:20)

हमें विश्वास है कि प्रभु यीशु परमेश्वर है, क्योंकि उनमें परमेश्वर के सारे गुण विद्यमान हैं। यीशु का एक नाम है, इम्मानुएल (मत्ती 1:33) इसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ है, जो हमें मालूम है तो फिर हमें किस बात का डर है, जीवन का अन्त कई व्यक्तियों को डरावना सच नजर आता है जबकि पवित्र वचन हमें याद दिलाता है कि आप पृथ्वी पर की नहीं ऊपर की चीजों की चिन्ता किया करें। आप तो मर चुके हैं आपका जीवन मसीह के साथ ईश्वर में छिपा हुआ है। जब हमारा जीवन मसीह में छिपा है तो हमें भी सारी चिन्ताओं से मुक्त होकर परमेश्वर पर विश्वास रखना है। इसी में हमारा सच्चा सुख है। आमेन!

एस.बी. सेमुएल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

धर्मसभा की सफलता के लिए प्रार्थना

हे पवित्र आत्मा, हम तेरे नाम पर यहाँ उपस्थित हैं। तू ही हमारा एकमात्र मार्गदर्शक है। तू हमारे हृदयों में अपना वास कर ले और हमें वह मार्ग दिखा, जिस पर हमें चलना और निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

हम सब कमज़ोर और पापी हैं। हम किसी भी प्रकार की अव्यवस्था को बढ़ावा न दें। अज्ञानता हमें गलत मार्ग पर न ले जाए और न ही पक्षपात हमारे कार्यों को प्रभावित कर सके।

तुझमें हमारी एकता बनी रहे, जिससे हम एक साथ मिलकर अनन्त जीवन की ओर आगे बढ़ें और कभी भी सत्य एवं सद्मार्ग से न भटकें।

हम तुझसे यह प्रार्थना करते हैं, जो हर स्थान पर और हर समय पिता और पुत्र के साथ-साथ युगानुयुग तक कार्य करता है। **आमेन**

जैत गाँव से जुड़ीं मेरे सीरिया दादा जी की यादें!

जैत गाँव राष्ट्रीय राजमार्ग न. 2 पर आगरा–दिल्ली मार्ग पर मथुरा से लगभग 15 किलोमीटर दिल्ली की ओर जैत गाँव स्थित है। यह गाँव बहुत पुराना है। यहाँ पर पत्थर की एक बहुत बड़ी सर्प की मूर्ति बनी है, जो इस गाँव के ऐतिहासिक होने का प्रमाण है। प्रारम्भ में यह एक छोटा से गाँव था। यह एक पठार रूपी ऊँची भूमि पर बसा हुआ है। आज भी यहाँ घनी आबादी में लोग रहते हैं। समय के साथ–साथ गाँव भी काफी बड़ा हो गया है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख धर्म के परिवार परस्पर मिलकर रहते हैं।

जैत गाँव में लगभग 1930–35 के मध्य ईसाई मिशनरियों का आगमन हुआ। यह कुछ इस तरह हुआ कि गाँव के कुछ लोगों की रिश्तेदारी मथुरा के पास सिरसा गाँव में थी। उस गाँव में फ्रान्सिकन ब्रदर एवं फादर्स द्वारा मिशनरी कार्य चल रहा था। उसी दौरान गाँव के मंगू बाबा और मीका बाबा उस गाँव में अपनी रिश्तेदारी में घूमने गये थे, तब उनकी मुलाकात फादर एवं ब्रदर से हुई और उन्होंने फादर और ब्रदर से बात की तो मंगू बाबा एवं भीकाबाब को फादर और ब्रदर का व्यवहार, कार्य एवं सेवाभाव बहुत अच्छा लगा। उन्होंने फादर एवं ब्रदर को जैत गाँव में आने एवं सेवा कार्य करने का निमंत्रण दिया। कुछ समय बाद फादर एवं ब्रदर गाँव में आये और गाँववालों ने उनका स्वागत किया। गाँव के ही लालाराम बाबा ने उन्हें अपने घर पर एक कच्चा कमरा प्रार्थना करने के लिए दे दिया। वे लोग वहाँ पर करीब पाँच वर्ष तक प्रार्थना करते रहे और गाँव वाले भी प्रार्थना में भाग लेने लगे। प्रारम्भ में 10 से 15 लोगों ने बपतिस्मा ग्रहण किया उनमें मंगूबाबा, भीकाराम, बलवन्ता मौसी, रामस्वरूप बाबा, लालाराम, स्वर्ग सिंह, राम मिशन आदि थे। इसके बाद गाँव के ऊपरी हिस्से पर बलवन्ता बाबा ने प्रार्थना के लिये दान स्वरूप 200 वर्ग गज जमीन फादर को दी। उस जमीन पर फादर ने एक कमरा एवं बरामदा बनाया। फिर वहाँ पर प्रार्थना एवं मिस्सा बलिदान चढ़ाने लगे। उसी दौरान गाँव के कुछ असमाजिक तत्वों ने उस गिरजाघर को लूट लिया एवं गाँववालों से मारपीट की। वह कमरा आज भी पुराना गिरजाघर के नाम से गाँव में प्रसिद्ध है। उस गिरजाघर में 10 से 15 वर्ष तक प्रार्थना होती रही और गाँव वालों का विश्वास बढ़ता गया और प्रभु के विश्वासी अनुयायी बढ़ने लगे। फादर और ब्रदर के साथ गाँव के लोग भी रात भर जागकर प्रार्थना करते थे। वे प्रार्थना के समय दीपक जलाते थे जो मिट्टी का बना हुआ होता था। उसमें तेल बहुत कम आता था। वह दीपक पूरी रात उस थोड़े से तेल से जलता रहता था। यह प्रभु का एक चमत्कार ही साबित हुआ। इसे देखकर लोगों का विश्वास और भी दृढ़ होता गया और माता मरियम के भक्तों की संख्या भी धीरे–धीरे बढ़ने लगी।

1962 में गाँव के बाहर जमीन खरीदकर एक छोटा सा चर्च बनाया गया। 1968 में आसमी धर्मबहनों ने मिशन सेवा आरम्भ किया। 1972 में एक अस्पताल का निर्माण हुआ। 1988 में जीसस एण्ड मेरी संस्था की धर्म बहनों ने चिकित्सीय एवं समाज सेवा का कार्य संभाला। इसके साथ शिक्षण कार्य भी शुरु किया। 1990 में निष्कलंक माता स्कूल की स्थापना हुई, जहाँ कक्षा 10 तक की शिक्षा हिन्दी–अंग्रेजी माध्यम में आज सम्पन्न हो रही है। 1992 से 2001 तक की कई फादर लोगों के अथक प्रयास से गरीब बच्चों के लिए एक छात्रावास का कार्य सम्पन्न हुआ। 2016 जुलाई 31 को जैत में एक नए भवन की आशिष सम्पन्न हुई।

हम जैतवासी इस मिशन से जुड़े सभी महाधर्माध्यक्षों व पुरोहितों, धर्मबहनों व धर्म प्रचारकों को धन्यवाद अर्पित करते हैं। ईश्वर आपको आशीर्वाद प्रदान करे।

सचिन (प्रपौत्र सीरिया बाबा)
सहायक- धरम सिंह, जैत (मथुरा)

Our Faith and Belief

A new bar opened just opposite to the church. Some church authorities ran to the parish priest and informed him about this bar. The parish priest along with few parish council members approached to that bar man and requested him to move his bar to another place. But bar man was reluctant to move anywhere. All the attempts by the parish priest failed.

Now the only one possible way was prayer. Next Sunday he announced "brothers and sisters let us pray earnestly to God our Father that He may brighten the mind of that bar man. So that he move to another place. People started praying because they knew prayers can make wonders and bring about a healing. On that very night there was heavy rain and the lightning struck that bar building.Then within a second the bar building collapsed and got burnt.

The bar man was very angry. He filed a suit in the court. Then the court summoned both the parties. One side parish priest with his team and on another side that bar man with his friends. Judge listened both of them very carefully since it was the question of a divine power. After hearing he said "…Today we have this bar man who believes in the power of prayer and here we have parish priest who doesn'tbelieve in the power of prayers".

So friends what would have happened if the parish priest said "yes..?

Whatever it may be, this small incident puts a question mark on our faith and belief. Jesus has said in the Holy Bible "If you have faith as small as a mustard seed, then you can command the mountain uproot yourself and fall in the sea and it will obey you" Preaching big things and not practicing and whenever get a chance to proclaim the truth showing our back just like this parish priest. He would have told the judge that "yes, we prayed to God that he may brighten the mind of this bar man. But God's ways are different. We humans become helpless and we have to surrender our lives to Him.

Speak the truth and the truth will set you free.

J.P. Quadras, Mathura

DATES TO REMEMBER

OCTOBER

01 B.D. Fr. Varghese Kunnath
01 O.D. Fr. M.A. Jude
01 O.D. Fr. Louis Xess
05 B.D. Fr. Prakash D'Souza
07 B.D. Fr. Tomy V.A.
09 O.D. Fr. Preas Antony
11 O.D. Fr. G. Xavier
12 B.D. Fr. Saroj Kumar Nayak
21 B.D. Fr. Eugene Moon Lazarus
27 O.D. Fr. Shajun S.
27 O.D. Fr. Suthesh
27 O.D. Fr. Viniversal D'Souza
28 O.D. Fr. Siju Pindikanayil
28 O.D. Fr. Tony D'Almeida
28 O.D. Fr. Santiago Raj
28 O.D. Fr. Pasala Joseph Kumar
28 O.D. Fr. Praveen Moras
28 O.D. Fr. Praveen D'Costa
28 O.D. Fr. Prakash Rodrigues
28 O.D. Fr. Santeesh Antony
29 O.D. Fr. Mariyan Lobo
29 B.D. Fr. Thomas K.C.

A Father To His Child

I am always yours.
What you may be,
How you may be,
Where you may be,
Why you may be,
I am your father and proud of you.
My love and affection may not have a noticeable gesture,
But you are always in my deepest heart.
My anger may have spoken harsh and agonising words,
But my heart weeps all those moments.
My care may have expressed rebukes,
But my hands remain your protection.
My queries may have shown irritation,
But my thoughts are occupied with your wellbeing.
My corrections may not be courteous,
But my wish and expectations want you to achieve success.
My guidance may have never been gentle,
But my prayers always plead for your victory.
My attitude may not be kind,
But my heart always longs for your independence.
I couldn't have a father like yours,
But I try my best to give what I had lacked.
My approach may have been arrogant,
But my appreciation is what you deserve.
Be yourself, not my resemblance.
Have your wish fulfilled, not my expectations.
Live your life, not my commands.
I am always yours.
Believe in God,
Believe in yourself,
Believe in your Mother,
Believe in your Siblings,
Be bold when you are right,
Be humble when you are wrong.
At times of hardship and struggles just look down and there you are on my shoulders.
I love you not in words alone but in my heart and soul.

- Chinnadurai Amalaselvan, Hathras

मुखौटा

अपने चहरे पर कई
चेहरे लगाते हैं लोग
क्या वजह है जो
अपनी पहचान छिपाते हैं लोग।

कभी जिंदगी से रू–बरू,
होऊँगी तो पूछूँगी
क्यों मुखौटे को अपनी
पहचान बनाते हैं लोग।

जो किस्मत में लिखा है
वो पूरा नहीं पड़ता
फिर क्यों दूसरों की
किस्मत चुराते हैं लोग

उधार के रूपयों में सिर्फ पेट भरता है,
आत्मा तृप्त नहीं होती,
उतरन से सिर्फ तन ढकता है
मन की लालसा कैसे छिपाओगे।

चेहरे पर मुखौटा लगाने से
असयिलत नहीं छिपती,
शरीत तो वस्त्र है,
अंतर आत्मा को कैसे समझाओगे।

—अंजलीना मोसस, आगरा

Lovely poem by Sri Ram Jethmalani, who died at 95

Sometimes in the dark of the night,
I visit my conscience
To see if it is still breathing,
For its dying a slow death
Every day.

When I pay for a meal in a fancy place.
An amount which is perhaps the monthly income
Of the guard who holds the door open.
And quickly I shrug away that thought,
It dies a little.

When I buy vegetables from the vendor,
And his son chhotu smilingly weighs the potatoes,
Chhotu, a small child, who should be studying at school.
I look the other way
It dies a little.

When I am decked up in a designer dress,
A dress that cost a bomb
And I see a woman at the crossing,
In tatters,trying unsuccessfully to save her dignity.
And I immediately roll up my window.
It dies a little.

When I buy expensive gifts for my children,
On return, I see half clad children,
With empty stomach and hungry eyes,
Selling toys at red light
I try to save my conscience by buying some, yet
It dies a little.

When my sick maid sends her daughter to work,
Making her bunk school
I know I should tell her to go back.
But I look at the loaded sink and dirty dishes,
And I tell myself that is just for a couple of days
It dies a little.

When I hear about a rape
or a murder of a child,
I feel sad, yet a little thankful that it's not my child.
I can not look at myself in the mirror,
It dies a little.

When people fight over caste creed and religion.
I feel hurt and helpless
I tell myself that my country is going to the dogs,
I blame the corrupt politicians,
Absolving myself of all responsibilities
It dies a little.

When my city is choked.
Breathing is dangerous in the smog ridden metropolis,
I take my car to work daily ,
Not taking the metro,not trying car pool.
One car won't make a difference, I think
It dies a little.

So when in the dark of the night,
I visit my conscience
And find it still breathing
I am surprised.
For, with my own hands
Daily, bit by bit, I kill it, I bury it.

– Sri Ram Jethmalani

Saint of the Month

St. Luke

Feast Day : 18 October

St. Luke was one of the four Evangelists. Since the 2nd century he has been regarded as the author of the Third Gospel and its sequel, the Acts of the Apostles.

Luke's name—of Latin origin—indicates that he apparently was not of Jewish derivation. The earliest surviving testimony describes him as a Syrian from Antioch. His abundant acquaintance with the Antiochean Church, as well as his knowledge of literary Greek, both illustrated in his writings, supports this testimony. Tradition and one text of St. Paul's (Colossians 4:14) say that Luke was a trained physician. His Gospel exhibits a Greek literary style absent from the other Gospels and documents of the New Testament. Luke, apparently, was a well-educated man. His Greek was as polished as that of such classical writers as Xenophon.

Luke's association with the disciples of Jesus probably began after Christ's death, in the early 30s of the 1st century. His Gospel reveals a special acquaintance with Mary, the mother of Jesus, and tradition describes him as a friend and companion of Paul and of Mark. When Paul began his second missionary journey, about 49 A.D., Luke became a member of the party, joining Paul at the town of Troas and traveling to Macedonia with him (Acts 16: 11-12). Luke then probably remained at Philippi, rejoining Paul when he had finished his third missionary journey and was returning to Jerusalem (Acts 20:5, 26:18). The Acts further say that Luke accompanied Paul when Paul was taken as a prisoner to Rome to be judged by Caesar (Acts 27:1, 28:26). The contents of Paul's letters to Philemon (24) and Timothy (II, 4:11) reveal that Luke probably stayed with Paul until Paul's death. A document called the Anti-Marcionite Prologue, which dates from the end of the 2nd century, says that Luke died unmarried in Boeotia or Bithynia at the age of 84 toward the end of the 1st century.

Luke's authorship of the Third Gospel has not been seriously disputed. Nor has the attribution of the Acts of the Apostles to him been questioned. Luke's Gospel is clearly related to the Gospels of Mark and Matthew both in content and in structure; all three drew on a common source. Luke, however, used a second source unknown to either Matthew or Mark. Scholars have surmised that this source may have been Mary, the mother of Jesus, and her closest friends, all of whom knew Jesus intimately.

The story of Jesus is presented by Luke within a tripartite view of human history. According to his view, the lifetime of Jesus occupied the central position, being preceded by the time of the Law and the Prophets and being followed by the time of the Christian Church. Scholars have assigned the composition of Luke's Gospel to between 70 and 80. Both internal and external evidence indicate that it was composed outside Palestine and intended for use by non-Jews.

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में बालिका दिवस की धूम

काथलिक चर्च में 8 सितम्बर को बालिका दिवस मनाया जाता है, परन्तु हमारी सेंट पैट्रिक्स पल्ली में रविवार 19 सितम्बर को बालिका दिवस का आयोजन किया गया। सबसे पहले सभी बालिकाओं ने बैज लगाकर; जिस पर लिखा था, ''मैं मूल्यवान हूँ'' जुलूस के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। सभी बालिकाओं ने भक्तिपूर्वक मिस्सा बलिदान में भाग लिया। दोनों पाठ और विश्वासियों के निवेदन बहुत ही निपुणता के साथ पढ़े गए। गायन मण्डली में भी बालिकाओं द्वारा सुंदर एवं भक्तिपूर्ण गीत गाये गए। प्रस्तावना श्री जूड नाडर ने पढ़ी, जिसमें बालिकाओं को सौभाग्यवती बताया गया एवं उनके अन्य गुणों पर भी जोर दिया गया।

मेहमान पुरोहित श्रद्धेय फादर क्रिस्टोफर मसीह (एस एफ एक्स), श्रद्धेय फादर जूड, श्रद्धेय फादर ग्रेगरी (पल्ली पुरोहित), श्रद्धेय फादर शाजुन (सहायक पल्ली पुरोहित) ने मिस्सा बलिदान चढ़ाया। पवित्र मिस्सा में बालिकाओं के लिए विशेष प्रार्थना हुई।

फादर जूड ने अपने प्रवचन में पवित्र बाइबिल की कुछ प्रमुख महिलाओं की अहम भूमिकाओं के बारे में बताया, जिनमें रूत एक उत्कृष्ट बहु थी और एस्तेर ने अपनी जाति को बचाने के लिए अपना संपूर्ण सहयोग दिया था। यूदित ने अपने देश को बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, हन्ना ने एक भक्तिपूर्ण जीवन बिताते हुए एक उच्चतम माँ का जीवन बिताया। सबसे उच्च एवं उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में माता मरियम हैं, जिन्होंने बाल्यकाल से ही एक आज्ञाकारी बालिका का जीवन जीया और अंत तक पिता परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। इन सभी ऐतिहासिक महिलाओं ने सम्पूर्ण मानव जाति का मार्ग प्रदर्शित किया।

— फादर ग्रेगरी थरायल

सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा में वोटर आई डी कार्ड शिविर

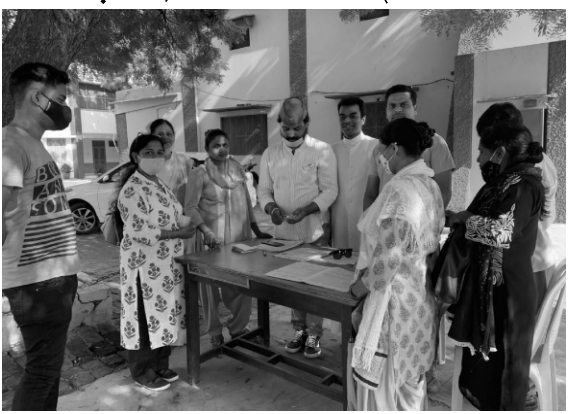

आगरा 12–13 सितम्बर। सेंट मेरीज़ चर्च के विश्वासी श्री ईशान मैथ्यु (सपा कार्यकर्ता) के सहयोग से रविवार–सोमवार (12–13 सितम्बर) को चर्च प्रांगण में वोटर आई–डी कार्ड बनाने का शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन सहायक पल्ली पुरोहित फादर प्रकाश रॉड्रिग्ज़ की प्रार्थना के साथ हुआ। शिविर में करीब 50 लोगों ने पंजीकरण कराया।

DEXCO Elections held in the Cathedral Parish

Agra, 16 Sep. Finally after the Pandemic, the elections of the new office bearers in the Cathedral Parish, were held in St. Joseph's Pastoral Centre, Agra. Rev. Fr. Ignatius Miranda, Parish Priest presided over the ceremony.

Prior to the elections, a talk on leadership was given by Fr. Dominic Geroge, Regional Youth Director (DYD). In his talk he explained the role of a Catholic Youth in the Church and in Society at large. He briefly highlighted the virtues of a true leader in the Church. Then the elections of the new office bearers were conducted. Senior youth Alex Wilson helped in conducting the elections by secret ballot system.

The newly elected office bearers are; Olive Lazlie (President), Aron Joshi (Vice Presidence), Ashleen Wilson (Secretary), Cyril Richard (Treasurer), Melvin Robert (Media Incharge), Caron Wilson (Liturgy Incharge) and Brighty Paul (Cultural Incharge).

Once the new team of the office bearers was elected, the old and out going office bearers were given farewell. Ms. Blueleaf Olvin, Aryan, Steve Swamy and Ashleen Wilson were acknowledged for their selfless services rendered to the Parish.

Rev. Fr. Dominic George, Fr. Lawrence, Fr. Viniversal D'Souza, Sr. Pasha, RJM and Mr. Olvin Sohanlal (Youth Animator) were present for the meeting. The ceremony came to its halt with some light refreshment. **-Ashleen Wilson**

संत जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा में बालिका दिवस मनाया गया

19 सितम्बर को संत जूड पल्ली कौलक्खा में पल्ली पुरोहित फादर राफी के प्रयास व फादर शीजु, सिस्टर सोफिया व महिला मण्डल के सहयोग से बालिका दिवस बड़े ही हर्षोल्लास से बालिका दिवस मनाया गया। मिस्सा में पल्ली की सभी बालिकाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। उनके अभिभावकों ने उनका भरपूर सहयोग किया। मिस्सा में दोनों पाठ तथा विश्वासियों के लिए निवेदन भी बालिकाओं द्वारा पढ़े गए। चढ़ावे के लिए भी सभी बालिकाओं ने अपनी क्षमता अनुसार चढ़ावा अर्पित कर मिस्सा में अपना योगदान दिया। अपने प्रवचन में फादर राफी ने बालिका दिवस मनाने का उद्देश्य बताया। उन्होंने बताया कि बालिकाओं के अधिकारों के प्रति आज समाज को जागरुक होने की आवश्यकता है जिससे एक सुरक्षित वातावरण बालिकाओं को दिया जा सके। वे घबराएं नहीं अपितु हर क्षेत्र में बेझिझक होकर आगे बढ़ें और कामयाबी पाएं।

बेटी बोझ नहीं सम्मान है, बेटी गीता और कुरान है।
घर की प्यारी सी मुस्कान है, बेटी माँ-बाप की जान है।

— अंजलीना मोसस, कौलक्खा, आगरा

आगरा महाधर्मप्रांत के लिए नई युवा समिति का चयन

आगरा, 19 सितम्बर। यह हम सभी युवाओं के लिए एक विशेष दिन था, जब धर्मप्रांत की चारों डीनरियों (आगरा, मथुरा, अलीगढ़ और नोएडा) के लगभग 80

युवक-युवतियाँ अपने अनुप्राणदाताओं के साथ नई युवा समिति के चुनाव के लिए सेंट जोसफ पास्टोरल सेण्टर, आगरा में एकत्र हुए।

समारोह की शुरुआत में युवा निदेशक फादर प्रकाश डिसूजा ने ईश्वर से सभी युवाओं के लिए प्रार्थना की। युवा अध्यक्षा हेलेना टोप्पो ने पवित्र धर्मग्रंथ से एक पाठ पढ़ा। इसके बाद मुख्य वक्ता फादर (डॉ.) संतोष डीसा ने सभी युवाओं को सम्बोधित करते एक प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने अपने भाषण में युवाओं को सिखाया, कि वे किस प्रकार अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं, क्योंकि बदलाव हमेशा उन्नति की ओर ले जाता है।

तत्पश्चात आयुषी फ्रेंक और ऐलेक्स विल्सन ने उपस्थित युवाओं को समझाया कि, कैसे वे नई युवा समिति के साथ सहयोग करके नई बुलन्दियों को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने यह भी समझाया कि हम युवा कलीसिया के लिए क्या योगदान दे सकते हैं? कैसे हम कलीसिया के साथ मिलकर काम कर सकते है।

मध्यान्ह पूर्व फादर प्रकाश डिसूजा ने सभी युवाओं के लिए पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। फादर अरुण लसरादो ने प्रवचन दिया।

मध्यान्ह भोजन के बाद दिन का मुख्य कार्यक्रम अर्थात् नई युवा समिति का चुनाव कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रान्तीय युवा निदेशक फादर डॉमिनिक जॉर्ज, फादर प्रकाश डिसूजा और महाधर्मप्रांत की महिला अनुप्राणदात्री सिस्टर सविता बिरजी के निर्देशन में मत डालकर चुनाव सम्पन्न हुए। नई समिति के निर्वाचित युवा पदाधिकारी इस प्रकार हैं;

1. अध्यक्ष- रूबल प्रकाश (अलीगढ़)
2. उपाध्यक्ष- जेनिफर जे. एन्थोनी (सेंट थॉमस, आगरा)
3. सचिव- नीरज कुमार (अजय नगर, मथुरा)
4. कोषाध्यक्ष- फेलविन रेजी (सेंट मेरीज़, नोएडा)
5. युवक प्रतिनिधि- सुमिन सैमुअल सिवोल (ग्रे. नोएडा)
6. युवती प्रतिनिधि- देविना लाम्बा (सेंट मेरीज़, आगरा)
7. मीडिया प्रभारी- मेलविन रॉबर्ट (कथीड्रल, आगरा)

इनके साथ ही प्रत्येक डीनरी से एक युवक और एक युवती प्रतिनिधि भी निर्वाचित किए गए, जो अपनी डीनरी में इस नव निर्वाचित युवा समिति का सहयोग करेंगे। शपथ ग्रहण के पश्चात नई समिति ने कार्यभार संभाला तथा निवर्तमान (पुरानी) समिति के पदाधिकारियों को भावभीनी विदाई दी। इसके साथ ही नए सहयोगी यूथ निर्देशक फादर अरुण लसरादो का धर्मप्रांतीय युवा समिति में हार्दिक स्वागत किया गया।

समारोह के मुख्यातिथि अतिश्रद्धेय महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि थे। उन्होंने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को उनकी जिम्मेदारी और समाज व कलीसिया में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे मे समझाया।

हम अपने सभी धर्माध्यक्षों, पुरोहितों धर्मभाई-बहनों और अनुप्राणदाताओं के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने हमें जिम्मेदारी की भावना से काम करना सिखाया और हमारे व्यक्तिगत विकास में अहम भूमिका निभाई। आशा ही नहीं किन्तु पूर्ण विश्वास भी है, कि हमारी नई युवा कार्यकारिणी समिति और भी अधिक सेवा भावना के साथ काम करेगी। हमारा सहयोग और मार्गदर्शन, हमेशा उन्हें मिलता रहेगा। हम सभी युवाओं को साथ लेकर आगे बढ़ेंगे, ताकि जन जन तक ख्रीस्त का संदेश पहुँचा सकें। **— एलेक्स विल्सन**

महाधर्माध्यक्ष के संरक्षक संत का महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आगरा, 28 सितम्बर। कलीसिया प्रतिवर्ष 29 सितम्बर को महादूतों मिखाएल, गाब्रिएल और रफाएल का महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाती है।

इस वर्ष हमने एक दिन पूर्व (28 सितम्बर) को यह महापर्व मनाया, क्योंकि 29 तारीख को महाधर्माध्यक्ष जी को संत मिखाएल मिशन (अनूपनगर), मथुरा में पल्ली पर्व के लिए जाना था। समारोह के प्रारम्भ में धर्मप्रांत के सभी पुरोहित अपनी मासिक चुप्पी (आराधना) के लिए महागिरजाघर में जमा हुए। इस अवसर पर फादर सरोज नायक ने पुरोहितिक बुलाइट और वर्तमान समय में आने वाली चुनौतियों पर एक सारगर्भित संदेश दिया। अधिकांश पुरोहितों ने व्यक्तिगत रूप से पाप स्वीकार करके आध्यात्मिक तैयारी की।

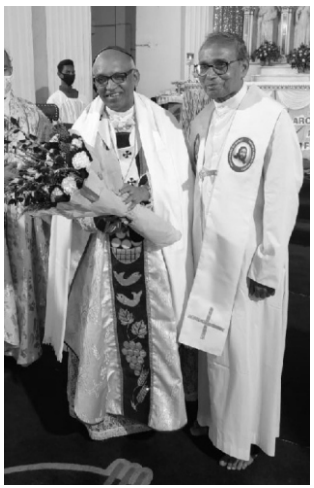

तत्पश्चात सभी पुरोहितों के साथ मिलकर महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने महादूतों के आदर में पवित्र यूखरिस्त चढ़ाया। अपने सुन्दर प्रवचन में महाधर्माध्यक्ष जी ने हमारे जीवन में महादूतों की उपस्थित और भूमिका को विस्तार से सझाया।

मिस्सा के बाद गिरजाघर में ही एक अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी पुरोहितों की ओर से फादर सेबास्टियन कुल्लीथानम ने महाधर्माध्यक्ष जी का अभिनन्दन किया। कथीड्रल के विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा स्वामी जी को पुष्प गुच्छ दिए गए, जबकि वरिष्ठ पुरोहित फादर जोस मालिएकल ने एक शॉल ओढ़ाकर उनका अभिनन्दन किया। गायन मण्डली ने अवसरानुकुल बधाई गीत गाया।

सहायक पल्ली पुरोहित फादर विनिवर्सल डिसूजा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। पल्ली पुरोहित फादर इग्नेशियस मिराण्डा की ओर से लड्डू खिलाकर सबका मुँह मीठा कराया गया। **—फा. विनिवर्सल डिसूज़ा**

Rt. Rev. Bishop P.P. Habil felicitated on his 8th Anniversary of Consecration

Agra, 29 Sep. Rt. Rev. P.P. Habil (Bishop of Agra Diocese-CNI) celebrated the Eighth Annivesary of Consecrated and Dedicated Life and Service to God and humanity. A special Thanksgiving service was organised on September 29, 2021 at St. George's Cathedral, Sadar Bazar, Agra Cantt. The Agra Diocese (Church of North India) consists of the whole of Western U.P., Uttrakhand etc. previously it was a part of the Diocese of Lucknow. There are about two dozen Presbyters (Pastors) working in Agra Diocese.

Rev. Fr. Varghese Kunnath (Director- Sadbhawana), Fr. Eugene Moon Lazarus (Director- Ecumenism) and Fr. Viniversal D'Souza (Asstt. Parish Priest- Cathedral) felicitated His Lordship in his Curia Office and wished him well on behalf of the Archbishop and Archdiocese. Later Fr. Varghese Kunnath, Fr. E. Moon Lazarus and Fr. Jacob Palamattom (Director - Dev Darshan, Agra Diocesan You Tube Channel and Principal of St. Paul's Inter College, Agra) joined in a fellowship dinner at St. Paul's Church College, Agra.

Bishop Deepak Tauro visits St. Lawrence Seminary, Agra

Agra, 30 Sept. Newly consecrated Bishop Deepak Valerian Tauro visited St. Lawrence

Seminary and Prem Daan (Missionary of Charity Home), Agra on the very next day of his Episcopal Consecration (Sep. 29, 2021) in New Delhi.

His Lordship along with his family members and friends first visited the Taj Mahal, Numero Uno and then famous Agra Red Fort. He was mesmerised to behold the beauty of both monuments.

Later, he addressed the young seminarians of St. Lawrence Seminary, Agra. He said, he considers it was a divine plan to visit this seminary and begin his ministry as a shepherd. He was 19 years in formation (forming the young souls into priesthood). Rev. Fr. Praksh D'Souza (Rector) and Fr. Louis Xess felicitated him with a shawl and bouqet, while the Brothers sang a congratulation and welcome song.

After spending a considerable time in the seminary, he visited Prem Daan, and appreciated the Missionaries' hardwork. As the time was running short he left for his Karmabhoomi (Delhi Archdiocse). **- Khabrinandan**

विवाह पूर्व तैयारी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आगरा, 2-3 अक्टूबर। इस वर्ष का दूसरा विवाह पूर्व तैयारी प्रशिक्षण शनिवार 2 अक्टूबर से रविवार 3 अक्टूबर को स्थानीय सेंट जोसफ पास्टोरल सेण्टर, आगरा में सम्पन्न हुआ। शिविर में महाधर्मप्रांत की विभिन्न पल्लियों व मिशन स्टेशनों से 26 युवक-युवतियों ने भाग लिया। ये युवा इसी वर्ष या आने वाले दिनों में विवाह सूत्र में बंध जाने वाले हैं। शिविर में पहले दिन फादर जॉन रोशन परेरा ने कलीसिया में माता-पिता की भागीदारी तथा श्रीमती मॉली जोस ने शुद्धता (हाइजिन) और परिवार नियोजन, तलाक, गंभीर जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन रविवार को फादर जेकब पालामट्टम (साजी) ने परिवार/दम्पत्ति के बीच आपसी संवाद पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात फादर (डॉ.) संतोष डीसा ने विवाह की कानूनी मान्यता व आवश्यकता को समझाया। फादर डॉमिनिक जॉर्ज ने मसीही परिवेश में बच्चों की परवरिश के बारे में बताया। तत्पश्चात फादर यूजिन मून लाजरस ने ख्रीस्तीय-विवाहित जीवन में धार्मिक वातावरण व प्रार्थना का महत्व समझाया। इसके बाद श्रद्धेय फादर इग्नेशियुस मिराण्डा ने सभी प्रतिभागियों के लिए पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया।

दोपहर के भोजन के बाद महाधर्मप्रान्त के चांसलर श्रद्धेय फादर भास्कर जेसुराज ने विवाहित जीवन में एक दूसरे को समझने व स्वीकार करने की बात बताई। अंतिम कक्षा में फादर संतोष ने वैवाहिक जीवन में सकारात्मक प्रेम पर प्रकाश डाला।

मूल्यांकन के बाद फादर इग्नेशियस मिराण्डा ने सभी उम्मीदवारों को शिविर में भाग लेने का प्रमाण पत्र देते हुए उनके मंगलमय जीवन की कामना की तथा उन्हें आशीर्वाद दिया। महाधर्मप्रांत में परिवार व लोकधर्मी आयोग के निदेशक फादर (डॉ.) संतोष डीसा ने बताया कि अगला शिविर अगले वर्ष मार्च के अन्त में होगा। अब प्रतिवर्ष दो बार इस तरह के शिविर आयोजित किए जाएंगे।

—खबरीलाल

गाँधी-शास्त्री जयन्ती पर देश में शान्ति और सद्भावना के लिए सभी गिरजाघरों में प्रार्थना सभाएं आयोजित

आगरा, 3 अक्टूबर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री की जयन्ती के अवसर पर शहर के सभी गिरजाघरों व संस्थाओं में देश की अखण्डता, शांति और सद्भावना के लिए विशेष विचार गोष्ठियां और सर्वधर्म प्रार्थना सभाएं आयोजित की गईं।

इस अवसर पर स्थानीय सेण्ट्रल मैथोडिस्ट चर्च में आगरा शहर के विभिन्न गिरजाघरों के संयुक्त सौजन्य से एक सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता श्रदेय पादरी सिल्वेस्टर मैसी ने की। प्रार्थना सभा में विभिन्न धर्मग्रन्थों से पाठ पढ़े गए व उन पर प्रार्थनाएं की गईं। देश के संविधान, संवैधानिक मूल्यों, राष्ट्राधिकारियों, सरकारी अधिकारियों, विभिन्न धर्म संप्रदायों के मध्य परस्पर शांति और भाईचारे के लिए देश की सभी महिलाओं, शोषित व बीमार लोगों, युवाओं व बच्चों, किसानों और बेरोजगारों के लिए विशेष प्रार्थना की गई। विषय व जयन्ती से सम्बन्धित भजन व गीत गाए गए। अध्यक्ष पादरी सिल्वेस्टर मैसी ने देश में सद्भावना के लिए मुख्य रूप से प्रार्थना की।

सेंट मेरीज़ चर्च के मीडिया प्रभारी फादर मून लाजरस ने सभा का संचालन किया। डॉ. राजू थॉमस ने भारतीय संविधान का महत्व समझाया। फादर वर्गीस कुन्नत ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रार्थना सभा में शहर के विभिन्न गिरजाघरों के पुरोहितों पादरी हॉरिस लाल, रेव्ह. हैरी सिंह, पास्टर नवरत्न सिंह, पास्टर महेश चन्द, श्री प्रवीण मिश्रा, कुछ विश्वासियों के अतिरिक्त सेंट लॉरेन्स गुरुकुल के छात्रों ने भी भाग लिया। **— डॉ. राजू थॉमस**

संत जूड पल्ली में युवाओं की बैठक आयोजित

आगरा, 3 अक्टूबर। सेंट जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा के युवाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर राफी के प्रयास से पल्ली के युवाओं के लिए एक प्रेरणादायक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का संचालन फादर डॉमिनिक जॉर्ज, प्रान्तीय युवा निदेशक द्वारा किया गया। फादर डॉमिनिक के साथ महाधर्मप्रांतीय युवा समिति के सदस्य भी उपस्थित थे।

अपने संदेश में फादर डॉमिनिक ने सभी युवाओं से टीम भावना से काम करने का आह्वान किया। इससे होने वाले लाभ भी युवाओं को सुझाए। उन्होंने यह भी समझाया कि किस प्रकार से उन्हें अपने भावी जीवन में सच्चे ख्रीस्तीय की भांति काम करना है। पल्ली की ओर से महिला अनुप्राणदात्री (ऐनीमेटर) सिस्टर जीन थॉमस ने भी युवाओं को सम्बोधित किया। पल्ली पुरोहित फादर राफी की ओर से सभी मेहमानों व युवाओं के लिए स्वजलपान का प्रबन्ध किया गया था।

— अंजलीना मोसस, कौलक्खा, आगरा

Agra Joint Cemetery Committee, Agra held its Annual General Meeting

Agra, Oct. 6. The AJCC (Agra Joint Cemetery Committee, Agra) conducted it's General Body Meeting on Tuesday 5 Oct. 2021 at St. Joseph's Pastoral Centre, Agra. Our both

Patrons Most Rev. Dr. Raphy Manjaly and Rt. Rev. Dr. P.P. Habil (Bishop of Agra Diocese-CNI) presided over the meeting. 16 members from various Churches attended it.

The members introduced themselves to one another. The new members were warmly welcomed. Bishop P.P. Habil presented a bouquet of flowers to the Archbishop Raphy Manjaly, while Rev. Gibrael Dass of St. John's Church, Hospital Road, honoured His Grace with a shawl and welcomed him on board (AJCC, Agra).

Various serious and relevant issues were discussed in the meeting. Then both patrons addressed the members, assuring them all required help, guidance and support.

Sri Praveen Mishra, Joint Secretary proposed the vote of thanks. Rev. Gibrael Dass said the final prayer, while the Archbishop gave the benediction. Thus, with some light refreshments the meeting came to its close.

- Fr. E.M. Lazarus

फातिमा अस्पताल, आगरा में 11वाँ ए.एन.एम. बैच प्रारम्भ

आगरा, 7 अक्टूबर। फातिमा अस्पताल, आगरा में 11वें एन.एम. बैच का दीप प्रज्वलन कर विधिवत् प्रारम्भ हो गया। अवसर पर अस्पताल के प्रेक्षागृह में एक विशेष दीप प्रज्वलन समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्षता श्रद्धेय फादर सेबास्टियन कोलीथानम ने की।

समारोह की शुरुआत छात्रा शालिनी द्वारा दिए गए स्वागत भाषण से हुई। तत्पश्चात फादर सेबास्टियन, फादर मून लाजरस, सिस्टर जॉली फ्रांसिस, श्रीमती मौली जोस एवं श्री अजय द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। तीन छात्राओं कोमल, रेचल और हर्षिता पॉल द्वारा एक प्रार्थना नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसके बाद नए 11वें बैच की सभी बारह छात्राओं द्वारा एक-एक करके अपना परिचय दिया गया। तत्पश्चात कु. राजश्री ने एक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया।

वरिष्ठ सिस्टर एमिली और अस्पताल प्रशासिका सिस्टर अंकिता मेरी के निर्देशन में सभी नई छात्राओं द्वारा हाथों में जलते दीप लेकर नर्सिंग सेवा की शपथ ली गई।

मुख्यातिथि फादर सेबास्टियन ने सभी छात्राओं को एक मोटीवेशनल टॉक (प्रेरणादायक भाषण) दिया। उन्होंने अपने सम्बोधन में सभी छात्राओं को फ्लोरेन्स नाईटिंगल्स के जीवन से प्रेरणा लेकर अपनी योग्यता का परिचय देने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि छात्राओं को अपनी प्रतिभाओं को निखारना होगा और इस चुनौतीपूर्ण युग में अपनी एक अलग पहचान बनानी होगी।

आध्यात्मिक गुरु फादर मून लाजरस ने भी छात्राओं से ईमानदारी, वफादारी और लगन की भावना से अपना प्रशिक्षण लेने एवं उसके उसके बाद निष्ठापूर्वक कार्य करने की सलाह दी।

सीनियर प्रशिक्षिका सिस्टर (श्रीमती) मौली जोस ने ने कहा, कि एक नर्स सेवा करने के साथ-साथ अपने परिवार के भरण पोषण के लिए काम करती है। संसार के हर क्षेत्र में नर्स की जरूरत होती है, इसलिए उसे काम मिल जाता है। हमें पूरी ईमानदारी से अपना काम करना चाहिए।

इस अवसर पर गत वर्ष के 10वें बैच की छात्राओं को सर्टिफिकेट और पुरस्कार प्रदान किए। छात्रा मेहजबीन को सर्वाधिक अंक पाने के लिए सम्मानित किया गया। श्री मयंक (असल उत्तर परियोजना के प्रोजेक्ट मैनेजर)

ने भी अपने अनुभव छात्राओं के साथ बांटे। कु. पूजा ने सभी के प्रति धन्यवाद दिया। इस प्रकार यह समारोह समाप्त हो गया।— **कु. शालिनी व कु. रेचेल, आगरा**

Sr. Clementine RJM celebrated her Diamond Jubilee

Agra, 10 Oct. Rev. Sr. Clementine RJM of St. Anthony's Junior College community celebrated Diamond Jubilee of her committed religious life. Due to pandemic protocal, a limited number of religious Sisters, friends and family members were invited for the celebration. To mark the solemnity, a thanksgiving Holy Mass was offered in the Convent Chapel. The preparation of the Jubilee celebration had begun much earlier. Rev. Fr. Prakash D'Souza, Rector of St. Lawerence Seminary was the main celebrant. Rev. Sr. Lucy D'Souza, Superior of the community gave a warm welcome to all invitees. She in a nutshell highlighted the life sketch and the services rendered by the jubilarin Sr. Celementine.

Rev. Fr. Santosh D'Sa preached a memorable homily, stating the challenges and difficulties faced by the religious all along their spiritual journey. But the Lord supports and strengthens the called, and looks on them steadily with love and compassion. That's the secret of our religious life. Prior to the Mass, Fr. Eugene Moon Lazarus gave a short introduction of the Jubilee Mass.

Mr. Harold Swamy, elder brother of Sr. Clementine with his family from Noida, RJM Sisters from St. Patrick's Convent, Agra and Nishkalanka Mata Church, Jaith (Mathura) participated in the Mass. Mr. Lokesh with his choir sang the melodious hymns to sooth the occasion.

After the Mass Sr. Clementine proposed the vote of thanks, acknowledging everyone's role in her life and ministry. Later a jubilee cake was cut and a banquette was served to all guests present. **- Meena Pollock**

New Youth Bearers elected in Sts. Simon & Jude's Parish, Agra

Agra, 10 Oct. Under the able guidance of our new Parish Priest Rev. Fr. Raphy, the elections of the new youth office Bearers were conducted. Along with Parish Priest Rev.Sr. Jean Thomas (CHF) and Rev. Sr. Sophie Dabre (Helpers of Mary) were also present for the meeting.

Rev. Fr. Raphy said the opening prayer. As per rules laid down by DEXCO, our elections were conducted.

The following members were elected, Aaron Moses (President), Shierley Paul (Vice President), William Dass (Secretary), Patrick Dass (Treasurer), Abhishek Lawrence (Boy Representative), Roseline Titio (Girl Representative) and Anugraha Babu (Media Incharge).

We hope and pray that our new office bearers will work with team spirit and thus make constructional changes for the betterment of the society. **-William Dass**

Archdiocese At A Glance

संत फ्रांसिस ज़ेवियर चर्च, एटा में माता मरियम का जन्मदिवस मनाया गया

8 सितम्बर को माता मरियम का जन्म दिवस धूमधाम से मनाने के सिलसिले में 29 अगस्त को सुबह 8 बजे माला विनती के साथ पल्ली पुरोहित फादर अरुल कुमार द्वारा माता मरियम के ध्वज पर आशीष दी गयी। तत्पश्चात आदरणीय सिस्टर पीटर एवं श्रीमान जोस ने उस ध्वज को श्रद्धापूर्वक आरोहित किया।

30 अगस्त को श्रद्धेय फादर जिप्सन पालाट्टी, फादर फ्रांसिस डिसूजा एवं उपयाजक कुलकान्त ने नोवेना प्रार्थना की शुरुआत की। 8 सितम्बर को माता मरियम के ध्वज को फादर स्टेनी ने उतारा। इसके बाद माता मरियम के जन्मदिवस के उत्सव के उपलक्ष्य में चर्च की परिक्रमा करते हुए भक्तिभाव के साथ माला विनती करते हुए चर्च में प्रवेश किया।

उस दिन के मुख्य याजक फादर मरियन लोबो थे। फादर स्टेनी ने अपने उपदेश में माता मरियम के जन्म के बारे में विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने कलीसिया में माता मरियम के महत्व को समझाया कि माता मरियम का आदर, सम्मान एवं भक्ति भावना करना हम सभी ख्रीस्तीयों का आवश्यक कर्तव्य है। उन्होंने माता मरियम के माता-पिता के जीवन पर भी प्रकाश डाला। पूजन पद्धति गायन मण्डली को अधिक भक्तिमय बनाने में सिस्टर कृपा का विशेष सहयोग रहा।

इस प्रकार नोवेना प्रार्थना के साथ हमने आध्यात्मिक तैयारी करके माता मरियम के जन्मोत्सव को हर्षोल्लास के साथ मनाया। मिस्सा बलिदान के बाद सभी विश्वासियों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई थी।

— संगीता बैंजामिन, एटा

Feast of St. Vincent De Paul celebrated in Greater Noida

G. Noida, 26 Sept. The members of St. Vincent De Paul Society (St. Joseph's Church, G. Noida Unit) celebrated their Patron's Day. A lovely and meaningful Liturgy was organised by the members. Rev. Fr. Rogimon Thomas, Principal; Jesus & Mary School, G. Noida offered the Holy Mass for their intention. He appreciated the hard and selfless work being done by the society. He also mentioned that all the charitable works specially done during COVID-19 Pandemic were praiseworthy.

After the Holy Mass few photos were taken. The entire Church Community felicitated the members of St. Vincent De Paul Society. Rev. Fr. Vinoy Pullivelil proposed the vote of thanks towards everyone present.

अनूपनगर (मथुरा) में संत मिखाएल का महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

अनूपनगर (मथुरा) 29 सितम्बर। अनूप नगर मिशन के संरक्षक संत महादूत मिखाएल का पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। वार्षिक पर्व की आध्यात्मिक तैयारी के लिए नौ दिवसीय (नोवेना) प्रार्थना और फिर 26-28 सितम्बर तक तीन दिवसीय (त्रिदुम) का आयोजन भी किया गया। इन तीन दिनों में फादर पीटर पारखे, फादर अरुण लसरादो और फादर जोबी ने पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया और प्रभावशाली प्रवचन दिया।

पर्व दिवस पर संत मिखाएल की पवित्र मूर्ति (डोली) सजाकर पूरे गाँव की परिक्रमा की गई। समारोह में बाहर से आए हुए विश्वासियों ने भी बड़ी भक्ति भावना के साथ भाग लिया। जुलूस की समाप्ति पर महाधर्माध्यक्ष डॉ. रॉफी मंजलि ने करीब बीस पुरोहितों के साथ गिरजाघर में संत मिखाएल के आदर में पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। स्वामी जी ने अपने सुन्दर प्रवचन में स्वर्गदूतों की उपस्थिति, उन पर विश्वास और उनके महत्व पर प्रकाश डाला। ईश्वर अपने इन महादूतों की मदद से अपने लोगों की निरन्तर रक्षा करते हैं। पर्व के अवसर पर चर्च को रंगबिरंगे फूलों, झण्डियों आदि से सुन्दरतापूर्वक सजाया गया था। पर्व के लिए पल्लीवासियों के साथ-साथ एफ.सी.सी. धर्मसमाज की धर्मबहनों, उपयाजक कुलकान्त और पल्लीवासियों ने भरपूर सहयोग दिया।

गाँववालों ने अपनी प्राचीन परम्परा को जारी रखते हुए सभी गांववासियों और बाहर से आए सभी अतिथियों के लिए प्रीतिभोज का आयोजन भी किया।

हाथरस में पल्ली पर्व धूमधाम से मनाया गया

हाथरस, 4 अक्टूबर। हमारी पल्ली सेंट फ्रांसिस चर्च, हाथरस में पल्ली के संरक्षक असीसी के संत फ्रांसिस का महापर्व की धूमधाम से मनाया गया। इस पर्व की तैयारी में सभी पल्लीवासियों ने पल्ली पुरोहित फादर सन्नी कोट्टूर एवं सहायक पल्ली पुरोहित फादर ज़ेवियर जी के निर्देशन में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

इस अवसर पर पर्व से पहले तीन दिवसीय प्रार्थना सभा व पवित्र मिस्सा बलिदान आयोजित कर आध्यात्मिक तैयारी की गई। पहले दिन पूर्व पल्ली पुरोहित फादर रॉबर्ट वर्गिस ने संत फ्रांसिस का ध्वज चढ़ाया व पवित्र मिस्सा अर्पित किया। दूसरे दिन फादर सन्नी ने मिस्सा चढ़ाया व प्रवचन दिया। इस दिन की याद में श्री प्रीतम किण्डो के बच्चे का बपतिस्मा हुआ। तीसरे व अंतिम दिन अर्थात् पर्व दिवस पर हमारे महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने पल्ली व निकटतम पल्लियों से आए मेहमान पुरोहितों के साथ धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। अपने प्रवचन में स्वामी जी के संत फ्रांसिस असीसी के जीवन पर प्रकाश डाला और हम सभी पल्लीवासियों से उनके समान प्रार्थनमाय सीधा सच्चा जीवन बिताने की अपील की।

मिस्सा के बाद सबने एक दूसरे को पर्व दिवस की बधाई दी। प्रीतिभोज के साथ समारोह समाप्त हो गया।

कु. अंशिता सुभाष, सेंट फ्रांसिस चर्च, हाथरस

Feast of Our Lady of Pilar celebrated in Dholpur (Raj.)

Dholpur, 10 Oct. The Patroness' Feast of our Church of Our Lady of Pilar was celebrated here in an atmosphere of great devotion and solemnity. The festive Mass was celebrated by our beloved Archbishop (Emeritus) Most Rev. Dr. Albert D'Souza. Fr. Anthony Fernandez, SFX (Prov. Secretary of Delhi Province) Fr. Dionisius, Principal of St. Mary's School, Morena, M.P., Fr. Alfredo Rodrigues, Parish Priest, Fr. Eusebio Gomes and Fr. Max Gonsalves, Curates of Dholpur Church concelebrated. The Abp. in His Homily highlighted the first apparition of Mother Mary to St. James in Saragossa in Spain in 40 AD standing on a pilar, said that we need to foster our devotion towards her as she leads us to Jesus.

The choir comprising of teachers and Missionary Sisters of Mother Mary sang melodious hymns under the direction of Fr. Alfredo Rodrigues. The Church, Altar and Statue of Our Lady of Pilar were beautifully decorated by our Sisters. Students of St. Xavier's School performed a prayer dance leading the celebrants to the Altar for the Eucharist. The Liturgy for Novena Masses and Feast Day Mass was prepared by Fr. Max. The celebration culminated with agape, the fellowship meal. **-Fr. Eusebio Gomes, SFX**

इंसानियत अभी जिन्दा है...

बात पिछले महीने की है। मैं रिचर्ड जॉन शाम को कथीड्रल हाउस से अपनी ड्यूटी करके अपनी एक्टिवा से वापिस अपने घर देवरी रोड की तरफ जा रहा था। रास्ते में त्योहार की वजह से काफी भीड़ थी। सदर बाजार में स्पीड ब्रेकर पर गाड़ी में झटके लगने के कारण मेरा मोबाइल फोन मेरी जेब से निकलकर रास्ते में कहीं गिर गया। लेकिन गाड़ी में झटके लगने के कारण मुझे इसका आभास नहीं हुआ। मेरे पीछे ही देवरी रोड के एक सज्जन व्यक्ति आ रहे थे। उन्होंने मेरे फोन को गिरते देख लिया था। उन्होंने अपनी बाइक रोककर मेरे फोन को उठा लिया और मुझे दो-तीन बार आवाज भी लगाई, लेकिन शोरगुल के कारण मुझे उनकी आवाज सुनाई नहीं दी। घर जाने के बाद मुझे पता चला कि मेरा फोन मेरे पास नहीं है, रास्ते में कहीं गिर गया। मैं बहुत परेशान हो गया। पत्नी का फोन लेकर अपने फोन पर कॉल लगाई। तुरन्त दूसरी ओर से एक सज्जन की आवाज आई। मैंने अपना परिचय दिया और अपने फोन के बारे में उन्हें बताया।

फिर उन्होंने जो कहा, उसे सुनकर मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होनें बताया कि उन्होंने मेरा फोन गिरते समय देख लिया था। उन्होंने उसे उठाकर मुझे पुकारा भी था लेकिन मैंने उनकी आवाज नहीं सुनी थी। अब वो फोन उनके पास सुरक्षित था। मैं कभी भी उनसे जाकर ले सकता था। उन सज्जन ने बताया कि वह संजय प्लेस में काम करते हैं और देवरी रोड पर रहते हैं। कितना संयोग कि मैं भी संजय प्लेस के निकट ही काम करता हूँ और देवरी रोड पर ही रहता हूँ।

फिर हमारे बीच यह तय हुआ कि वो अपने घर जाते वक्त मधु नगर चौराहे पर उसी रात मुझे वो फोन दे जाएंगे। निर्धारित समय पर निर्धारित जगह पर हम दो अजनबी मिले। उन्होंने बड़ी ईमानदारी से मेरा मोबाइल फोन मुझे लौटा दिया। मैंने उन्हें चाय का ऑफर किया, तो बड़ी शालीनता से मना कर दिया और फिर अपने रास्ते चले गए। मैं उनसे उनका नाम-पता भी नहीं पूछ सका। मैं बस देखता ही रह गया। मेरे मुख से बस यही निकला '**अभी भी इंसानियत जिन्दा है।**'

रिचर्ड जॉन, कथीड्रल हाउस, आगरा

Msgr. Deepak V. Tauro consecrated as Auxiliary Bishop of Delhi Archdiocese

Delhi, 29 Sept. Msgr. Deepak Valerian Tauro was consecrated and installed as Auxiliary Bishop of Delhi at the historic Sacred Heart Cathedral, New Delhi.

Around 200 dignitaries were present with Archbishop Emeritus Vincent Michael Concessao of Delhi presiding over the ordination Mass held with strict adherence to Covid-19 protocols.

Archbishop Leopoldo Girelli, the Papal Nuncio to India and Nepal, and 14 Bishops from various dioceses of North India were present. The ceremony was telecast live on social media for thousands of faithful across the country.

Rev. Fr. Anthony Swamy of Muzaffarpur Diocese presented Msgr. Tauro before Archbishop Vincent Concessao to be ordained. Archbishop Anil Couto of Delhi Archdiocese preached a meaningful homily. Fr. Jose T.J. was Master of Ceremony and gave instructions and commentary during the well organised liturgy under the able supervision of Fr. Shaiju.

Speaking on the occasion, John Barla, the federal minister of state for minority affairs, appreciated the Catholic Church and its institutions for their selfless service to India's people. Justice Kurian Joseph, a former Supreme Court judge, appreciated Bishop Tauro's chosen motto, "**To be humanly holy,**" and said it was the need of the day and hour.

The Archbishop of Bombay, Oswald Cardinal Gracias, in his message said the "Archdiocese of Delhi based in the national capital is a very important place in the country and the face of the Church."

Pope Francis on July 16 appointed the then Father Tauro, Rector of St. Albert's College, Ranchi, as its auxiliary Bishop. The 54-year-old Bishop Deepak is a priest of the Diocese of Muzaffarpur, Bihar.

Bishop Tauro was born on Aug. 2, 1967, at Chikmagalur, Karnataka. He did minor seminary studies at Muzaffarpur and Philosophy in Kolkata.

He studied Theology at St. Albert's College, Ranchi and started his priestly ministry as an assistant parish priest at Samastipur in 1996.

The territory of Delhi was part of the Archdiocese of Simla after it was established on Sept. 13, 1910. On April 13, 1937, it was renamed as the Metropolitan Archdiocese of Delhi & Simla.

The Metropolitan Archdiocese of Delhi was established on June 4, 1959. Jammu-Srinagar, Jalandhar and Simla and Chandigarh are its suffragan dioceses.

The Catholic population of Delhi Archdiocese is about 100,300 and it has 61 parishes, 132 diocesan priests, 157 religious priests and 413 women religious. **- Courtesy- UCA News**

Archdiocese at a glance...cont.

Nativity of BVM, Etah

Girl Child Day in St. Patrick's & St. Jude's

New DEXCO Team, Agra Diocese

Patron's Feast, Anoop Nagar

Bp. Habil Felicitated, 8th Anniversary

Bp. Deepak (Delhi) in SLS, Agra

St. Francis remembered, Hathras

11th ANM Batch, Fatima Hospital, Agra

AJCC G. Body Meeting

Lady of Pilar invoked, Dholpur

Sr. Clementine RJM, Diamond Jubilee

Lest we forget...

Claudia Joshi (SMC)
11.05.2021

Vedant Saraswat
02.10.2021 (St. Peter's)

Smt. Isabella Rani
06.10.2021 (Cath.)

Smt. Lily Dass
09.10.2021(St. Patrick's)

Sr. Prabha Topno (FSM)
10.10.2021

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff & Students of

ST. XAVIER'S SCHOOL

Sua Ka Bhag, Dholpur, Rajasthan

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com